भारतीय आदर्शनारि

सती जसमा।

जिसको

भारतीय सन्नारियों के हितार्थ

श्रीमती स्वर्गीया राजकुँवर बाई की पुण्यस्मृति म

श्रीमती सेठाणी आनन्दकुँवर बाई की तरफ से

भेंट

सम्पादक—

बालचन्दजी श्रीश्रीमाल

प्रकाशक

सेठ बदीचदजी वरदभानजी पितलिया

बेकर्स रतलाम

प्रथमावृति १०००

मूल्य सदुपयोग

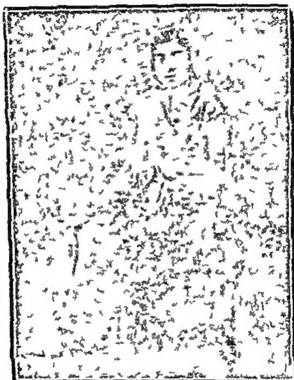
वीर निर्वाण सं० २४५२

प्राप्तिस्थान—
श्री मा० जैनपूज्य श्रीहुक्मीचंदजी महाराज की
सम्प्रदायका
हितेच्छु श्रावक मंडल
रतलाम

पोस्टचार्ज के लिये =) दो आने के टिकिट आने पर
भेजी जावेगी।

मुद्रक—
बाबू चिम्मनलाल जैन द्वारा
आदर्श प्रिंटिंग प्रेस, अजमेर

जिनकी पुण्य स्मृति में यह पुस्तक भेंट दी गई है



श्रीमती सौभाग्यवती राजकुँवरबाई

जन्म सं० १९८१ | निधन सं० २०००

वैसाख कृष्णा ३ | फाल्गुन शुक्ला [illegible]

उम्र साल २०

चित्र परिचय



मालवान्तर्गत रतलाम शहर में सेठ अमरचन्दजी साहब पितलिया प्रसिद्ध पुरुष हो गये हैं आपकी ख्याति समाज में व्याप्त है। आप संसार पक्ष में श्रीमन्त लक्षाधिपति एवं राज्यमान्य पुरुष थे। रतलाम नरेश महुर्म महाराजा श्री रणजितसिंहजी साहब बहादुर ने आपको सेठ, पदवी व दो घोड़ों की बग्गी एनायत की थी तथा पालखी आदि अन्य लवाजमा भी बक्षा था जो कि साधारण लोगों को रियासतों में नहीं दिया जाता।

श्रीमान् सेठ साहब राज्य मान्य होने के साथ ही साथ प्रजा में भी गण मान्य पुरुष थे। रतलाम के साहूकारों में आपकी दुकान प्रतिष्ठा पात्र मानी जाती है। सार्वजनिक कार्यों में विशेष भाग लेते थे इससे जनता आपको सम्मान की दृष्टि से देखती थी। धर्म पक्ष में भी आप श्रद्धावान एवं विशेपज्ञ थे बड़े २ आचार्यों व सन्तसतियों की सेवा की थी व उनकी वाणी श्रवण करके मनन करते थे जिससे आपकी प्रज्ञा बहुत तेज बन गयी थी जल में तेल की तरह आपका ज्ञान सुविस्तृत बन गया था जिससे शास्त्रीय

गूढ़ तत्वों का समाधान आप उत्तम शैली में करते थे यही कारण है कि बाहर से जिज्ञासुओं के प्रश्न आया ही करते थे।

मोरवी कान्फरेन्स के समय राजकोट निवासी राव बहादुर श्रीमान् शाह मोरारजी सेठ आपको प्रहस्थ वेष में साधु के सम्बोधन से पहचान कराते थे। और आपको गुरु स्थान पर मानकर सम्मान करते थे। ऐसे नर रत्न की पौत्री बाइराज कुंवर का यह चित्र है।

सेठ अमरचन्दजी के सुपुत्र सेठ वरदभाणजी साहब को स्थानकवासी जैन समाज में कौन ऐसा होगा जो नहीं जानता हो आपका स्वर्गवास हुए स्वल्प समय ही हुआ है परन्तु समाज आपको बार बार याद करती है। आपके वियोग का दुख बरती है। आप भी अपने पिता की तरह समाज में चमकते सितारे थे संसार पक्ष एवं धर्म दोनों में आप प्रतिष्ठित मान जाते थे।

श्रीमती राजकुंवर बाई जिनका चित्र आपके समक्ष है स्वर्गीय सेठ वरद भाणजी साहब की पुत्री थी सुसंस्कारों के कारण बचपन में ही धार्मिक एवं व्यावहारीक शिक्षा प्राप्त हो गई थी। स्वभाव से हंसमुख एवं मिलनसार प्रकृति की थी। इनका विवाह मन्दसौर निवासी श्रीमान् सेठ पन्नाजी तिलोकचन्दजी की फर्म के वारिशान में से कुंवरजी श्री सूरजमलजी साहब महेता के साथ सं० १९९६ में हुआ था। विवाह होने के ढाई वर्ष बाद आपको एक पुत्र का प्रसव हुआ था उसी अरसे में सेठ वरद भाणजी साहब का

स्वर्गवास हो जाने से इनको पिता श्री की अन्तिम भेंट न होने के कारण गहरा आघात पहुचा। शारिरिक निर्बलता में यह मानसिक आघात लगने से इनके शरीर में बिमारी ने जड़ घाल दी जो कुछ समय बाद भयकर रूप धारण कर गई।

सेठ वरदभाणजी साहब की सन्तानो में पुत्र न होने से बाई की विधवा माता ने सभी शक्य उपचार किये परन्तु सफलता प्राप्त न होकर निराशा ही साम्हने आयी तब आपकी माता ने हिम्मत धारण कर आलोचना व त्याग प्रत्याख्यान कराके धर्म श्रवणादि साज दिया। बाई ने भी अपने जीवन की यह दशा देखकर सबसे क्षमा याचना करते हुए परमात्मा के शरण में अपना जीवन समर्पण कर दिया।

इनकी पुण्य स्मृति में रूपे पन्दरहसो श्रीमान् सेठ सूरजमलजी साहब महेता ने और रूपे एक हजार श्रीमती सेठाणीजी आनन्द कुंवर बाई (इनकी माताजी) ने निकाले उसमें से कुछ रकम तो छुट कर जन हितकारी कार्यों व सस्थाओंको दी है और यह पुस्तक बाई की "पुण्यस्मृति" में आपके कर कमलों में पहुँचाई जाती है।

भवदीय
बालचन्दश्रीश्रीमाल

प्रकाशक का निवेदन

यह क्रान्तियुग है इसमें प्रत्येक मनुष्य अपनी उन्नति के लिये प्रयत्न कर रहा है किन्तु हमारे अर्द्धाङ्ग स्त्रियों का लक्ष्य इस ओर बहुत कम दिखाई देता है। ये अपने मात्र शृंगार और घरेलू कार्यों में ही अवकाश नहीं पाती हैं न इनकी समुचित शिक्षा का ही प्रबन्ध है न इनके सामने उत्तम आदर्श ही है।

श्री साधुमार्गी जैनपूज्यश्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय का हितेच्छु श्रावकमण्डल के अवैतनिक मंत्री श्रीयुत बालचन्दजी श्री श्रीमाल ने यह पुस्तक तैयार की थी किन्तु वर्तमान युरोपिय महायुद्ध के कारण साधन सामग्री का अत्यधिक महगाई के कारण प्रकाशित नहीं करपाये।

इधर निज बाई रामकुंवर का असामयिक वियोग होजाने से उसकी लौकिक क्रियाओं में विशेष व्यय न करते हुए उसकी पुण्य स्मृति में कोई स्त्रियोपयोगी कार्य करने की मेरी इच्छा हो रही थी कि यह पुस्तक मेरे निगाह में आगयी देखने से स्त्री जाति के उत्थान में, उनको अपनी वास्तविक स्थिती का भान कराने में तथा अपना धर्म कर्म समझने समझाने में अत्युपयोगी मालुम हुई इसलिये यह पुस्तक बाई की पुण्य स्मृति में प्रकाशित करता हूँ।

यहाँ यह प्रकट करना भी उचित प्रतीत होता है कि उक्त पुस्तक का मेटर श्रीयुत बालचन्दजी ने सहर्ष निःशुल्क दे दिया है एतदर्थ मैं उनका आभार मानता हूँ।

प्रकाशक

आभार प्रदर्शन



कोई भी लेखक साहित्य तैयार करता है तो उस किसी न किसी प्रमाण भूतसाहित्य या वक्ता का आधार लेना ही पडता है विगेर आधार लिये तो अतिशय ज्ञानी ही स्वतन्त्र प्रति पादन कर सकते है। श्री मज्जैनाचार्य स्वर्गीय पूज्य श्री १००८ श्री जवाहिर लालजी महाराज साहब के सुशिष्य श्री भीमलजी महाराज स० १९९० में दक्षिण पधारते समय यहा बिराज थे उस समय भावना धिकार में यह कथा गरजी सहित गायन करके फरमाई थी तब मेरे हृदय में यह स्फूरणा हुई थी कि ऐसी कथा ओं को साहित्य के रूप में जनता के समक्ष रखी जाय तो ससार का और खास कर स्त्री जाति को अधिक लाभ हो सकता है क्यों कि हिन्दु जाति में से हलकी मानी जाने वाली ओड जाति में भी ऐसी २ वीराग नाए हुइ है जिन्होने अपूर्व त्याग का उच्चादर्श रख कर अपने पति व्रत धर्म की रक्षा की है तब आज उच्च हिन्दु जाति में उत्पन्न हुई स्त्रियों को क्या करना चाहिये और क्या कर रही है इसका बोध पाठ मिले। परन्तु उक्त समय तक तो वह स्फूरणा यों ही रही याद भाव नगर से प्रकाशित होते हुए जैन पत्र के भेंट स्वरूप "शान्तु महेता" के भाग आये उनको देखने पर तीसरे भाग में कुछ प्रकरण "सती जसमा" के पढने में आये वे पढते ही इसे ... प्रगित करने की मेरी इच्छा बलवती

शुद्धिपत्रक



प्रूफ संशोधन करते हुए भी असावधानी से कुछ २ भूलें रह गई हैं सो सुधार कर पढ़ें।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	६	परन्तु	०	५१	३	सेरात	सटाट
३	७	नरीक्षक	निरीक्षक	५१	३	सन्दरयता	सन्द्रता
३	६	उठे	उडे	५२	७	जाति	जाता
५	१४	एव	एवं	५२	१५	स्मृतिपरम	स्मृतिपट
८	७	मनोने	मनोन	६४	५	बैठे	बैठ
८	६	विकत	विकृत	६८	१६	पिछा	पिछला
१७	१०	देते हुए	देती हुई	७५	१०	वालद	बलद
१८	१६	मान	भान	८७	११	छोड़ाना	छोड़ना
२६	३	मत्युर	मत्युत्तर	८७	१२	छोडना	छोडाना
३६	११	मारे	मीर	८६	१४	भोनलदेवी	मीनलदेवी
३६	१८	लोगों का	लोगो की				
४०	५	जावे हैं	हो जाते हैं	६१	७	स्तसान्ध	स्तन्ध

इसके सिवाय सबसे बड़ी भूलें तो कई जगह पैरा बदलने, तथा वाक्यों को ठीक रूप में जमाने की है जिससे भाव समझने में गड़बड़ हो जाती है। परन्तु वह शुद्धि में नहीं दी जा सकती। क्षन्तव्यम्।

सम्पादक

कवित्त

शाखी— महेम पडे मन्दिर पड़े, पड नाम नठाम ॥
एक पडे नहीं जगत मे, यश कीर्ति अभिराम ॥ १ ॥

(पूनमचान्दजी का चाल में)

गरबी—गाजे पाटणपुरमा गरवी गुजरनो धणीरे,
सांधो सबलो पेलो सोलंकी सिद्धराज,
जैनी कीर्ति व्यापीरही छे आजगमाधणीर ॥ १ ॥

तेणे लोको काने वाव कुवाबधावीयारे
मोटा मान सरोवर देवल धाम विशाल,
पोषी सब प्रजा ने शत्रु सब नमावीयार ॥ २ ॥

शाखी— धैर्यवान गुणवान छे, शूरवीर नीतिमान् ।
सोलंकी सिद्धराज ए गिरवागुण नी खाण ॥

गरबी— तेणे पाटणपास एक सरोवर आदर्युं र
खोदे रात्रदाड्याथी मालवी ओड अनेक,
ओडणो पालेनारो सारी माटी टोपलारे ॥ ३ ॥

शाखी— ओडकेरी नारीओ, ज्याकरतीनानारंग ।
हसती कुदती दोड़ती, रेलती प्रेम अभंग ॥

गरबी— पाले वडनी डाले झूले बालक पारणेरे,
माटी लेवा जसमा झुलाये निजबाल,
मलतो मुखड पेलो जाय कुवर ने धारणोरे ॥ ४ ॥

साखी— प्रेम माजाव जसमामणो हियडेदाजमडोम ।
हायेभूमाव मालन, हियडेमोहनमोर ॥

गरबी— मारवदारनी रानाव दनो वीर
आमे रूपानी रंगीली परम चतुर,
पासजइनराजाकरदेसुणम सुन्दरीरे ॥ ४ ॥

साखी— जसमानेईथीवरी,रापामूलगो भार ।
वणविघापाडरने कोणमारेढ्वाण ॥

सिद्धरा— माटीवडेवान चाकीमजकायाकरीनथीरे,
पाजरमीने तु रीजव तारी वाल,
८ थोथी थोडणो छे काम करे तारी वतीर ॥ ६ ॥

साखी— नरममुहालीदेहना, सीदनेतू कर माय ॥
लडायलाडेवालन, लेमारेणो साथ ॥

जसमा— जसमा कहे दराजा, काम करी लाथुनमेरे
मुजनेपेसीरहवा वाध अगेरोग
मारानवराइदाडा येठेनथीजापरवीरे ॥ ७ ॥

साखी— रहायहमारोयाराछे डरमाऊंपविभाव
हैयु मुहालु होयत्यां, शु कायानु काम ॥

सिद्ध— वसमा जंगलमा वसवाने तू सरजीनथीरे
मारानगर मणो तू आवीने जो नोक,
पाटण पुरनीशोभा हु तुजनेशीकहूरे ॥ ८ ॥

साखी— वसे जगलमाहरणिया, वसे वाघने नाग ॥

असमा वनमांसिद्दने चमेली सुन्दर बाग

जसमा— राना अन्धारी शेरी नें ऊंची मडियोरे,
तेमां माणसमाटे चाल्यानोनहीमार्ग,
जाणे उनाले उमराती देखु कीडीओरे ॥ ६ ॥

शाखी— वसेव्हालनीवाघणो वसेसिहो सुजाण ॥
शुवसीजाणेजगले कीमखानरनादान ॥

सिद्ध— जसमामाणसबहुदेखीनेतू घेलीथनेरे
साराहलकामनमाऊळे हलकाघाट
नक्ले खारारानी खिस कोली शाकररवादनेरे ॥ १० ॥

शाखी— शहरीजनना सुरवनी पीडीने शु भान ॥
दर शाकरने अधगणे सुणेन मीठुरजान ॥

जसमा— राजामेलामन माणमना मेला शहेर नारे,
मेली गलियोंमां बहुमारे छे दुगन्ध ॥
मेला जहरतणाजीवो छे जीवेजहर नारे ॥११॥

शाखी— निर्मल खीमकोलीअहा टेडकने न सुहाय ॥
कादव भोगी श्रापड़ां कादवमामलकाय ॥

सिद्ध— जसमा राजाना दरबारो तें जोया नथीरे,
तेमां बाग बगीचे खील्या छे बहु फूल,
जलना होज फ़ुवारा उडे आवीजो सहीरे ॥१२॥

शाखी— ऊंचो गढ़ दरबारनो, गोरी गोरी गाय,
जाणो स्वर्गनी सुन्दरी, रही अहीं लोभाय ॥

जसमा— [illegible] जगल आगल नाग बगीचा घूल छेरे,

जेवो सूरज आगल तारानो चिलकाट,
मारा जंगलनो मोनूतो मोघे मूल्य छेरे ॥१३॥

साखी— सोना न कदि पाजरे, मेना जो पुराय ॥
खाता पीता मस्ती जगल नी वनराय ॥
सिद्ध— जसमा जगलनी वातो तू आज विसारजेरे,
मीठा नरघाने सारगी फेरासूर,
गायन सुणवान काने तू म्हेले आवजेर ॥१४॥

साखी— महले महले माननो, छे गाने गुलतान ॥
तेने नयण निरखवा, भूलो जगल भान ॥
जसमा— राजा नव रीझु नरघा मारमी सूरथीरे,
मेना मोर पपैये टेव्या छे सुमधान,
वातो कोयलनाटहुकानी तो हुँकहेवी नथीरे ॥१५॥

साखी— जड मा राचे जड घोया, चेतन चेतन तान ॥
सुक भावे छे कोकिला करती पचम गान ॥
सिद्ध— ओढणु आवो तो उतारू मन्दिर मालियेरे,
रहनो मित्र सहो दूर सर्व सम्बन्धों साथ,
तमोने प्रियजनो मानीने निशदिन पालशु रे ॥१६॥

साखी— राज्य भुवने आवीवसो, वननी छोडी आश ॥
हेमहिंडोले हिचनो, माणो दिव्य विलास ॥
जसमा— ओढणु ने ज्वरघाजोइये मगहारे,
मेडीमाले चढता मुभने आवेफेर,

पदतां पग भांगेने काया थई जाय कुशहीरे, ॥१७॥

साखी— वडवडाई घडलातणी, ममहिंडोलाखाट ॥
यूतवेलो श्रायास छे, शु कर्हुवननी थात॥
सिद्ध— ओढण आवो तो पिरसाऊं मेवा चूरमारे,
मुने हाथी घोड़ा गुजरपतिने द्वार,
तेने पेरीने हर्षोशो ओढण ऊरमारे ॥१८॥

साखी— सोना केरा थाल ने, रत्न जडित बाजोट ॥
लसो रमो जसमाप्रिये, मुकीमननी खोत ॥
जसमा— राजा ओढण ने क्यालुनोइये घेसनारे,
राजा शुछे मारे हय हाथी नु काम,
न्हीं ने दुध भजेना मारे भुरी भेंसना रे ॥१९॥

साखी— पामीपोपणनीरनु फूलथी घेला छवाय ॥
पामीपोपणलीरनु, तेमपले करमाय ॥
सिद्ध— ओढण मांगोल्योने आछाशालु ओढनारे,
हीरा माणेक मोती सोनाना सिणगार,
आवी कचन वरणी काया पर शोभेघणारे ॥२०॥

साखी— हीरा क्सी जरियन तणा रेशमी चोली चोक ॥
ओढण ओढोहोंसथी ते विन जीव्यु फोक ॥
जसमा— राजा लाडाटक्से आछातो फाटीजसेरेफो
नालु घास घणोठी गठीकठे हार,
हीरा मोतीने सोना मा तरकर भयवशेरे ॥२१॥

साखी— भीणावालिम हायना, आडा ओढ ओढण ।
पतिथी कांई वालू नथी, रेशमी जरीयनमेन ॥

सिद्ध— जसमा कहे तू मुजने केवोदे मारो पति रे,
मारा जेवो समपु नारी जेने पेर ॥
एना जेवो मुखियो आपगमां बीचोमांरे ॥२२

साखी— तुजवालिमनीवातडी, वेमुखी मारगेल ।
प्रेमी पुगल ने आंगणे, प्रेमदारंग रेल ॥

जसमा— पहेलो केह कसीने काम करे मारो पति रे,
जेनामोलीडामांव्हेक छे बहुपुरुं ॥
जेनी कोदाली ना पाथी धरती धूजतीरे ॥२३॥

साखी— बात कहूँ शु व्हालनी, मुख थी कही न जाय ॥
सगजु होतो सभग जो, आ मयण वरसाय ॥

सिद्ध— जोने कामकरंता जुवए वारामशीरे ।
ऐनामनमां मारो पुरो नहीं विश्वास ॥
मारी मुक्त सजाणे जसमाए मारो पति रे ॥२४॥

साखी— गामडियो गुण चोर ते, शु जाणेप्रेमनी रीत ॥
ब्हेमीप छे मेलडो शु चाहे तुज चित ॥

जसमा— राना साधाने भय लेश नथी संसार मांरे ।
मारा पति ने मारो पुरण छे विश्वास ॥
हुँ तो अन्य जनो ने माइ गणी रहुँ मारमारे ॥२५॥

साखी— चितडुवो में आपियु गामडिया ने हाथ ॥

सुज उर गमते ना दिस, एचिरुदुओनाथ ॥

राजा— जसमा राजा अरू राण्या न हुँ तावकरू रे,
मोटा महारथी पण साम न आव जोज,
तोपण तारा उपर हुस्म कदी नहीं आन्रू रे ॥२६॥

साखी— जसमा वसमा रायने कही दे दिलनी वात ॥
ओर नथी ताराफने नहीं करतो उत्पात ॥

जसमा— राजा कायाने माया पर बल नृपनु वस्तुरे,
प्रभूए जीव धरयो छे जूदो काया माय ॥
मारे भूप तणु पक्ष तेपर नव चाले कशु रे ॥२७॥

साखी— मनडु आ तनमा नथी, मन थी दूरे नूर ॥
मारा वालिम ऊरमां, वसे सदारसपुर ॥

सिद्ध— जसमा दृढता तारी देखी विस्मय थाय छेरे ॥
आवा दम्पतिने पण आखिर होय वियोग ॥
मिथ्या आजगना सुख मारे मन मुजाय छरे ॥२८॥

साखी— नेकटकेधारी सती धन्य ? अवतार ॥
दम्पति केरा दिलमां सत्य प्रेम प्रचार ॥

जसमा— राजा कोई न जाणे काले मारू शु थसेरे,
एवी अल्प जिन्दगी माणे आ सौ लोक,
रूडी रेणी सुख परलोके पूरण आपशेरे ॥२९॥

साखी— जुठो आ संसारछे, जुठो जग व्यवहार ॥
सांची स्वामि सेव छे, सत्यएज संमार ॥

सिद्धराज—जसमा पहेलु के आपीजु परणित ताहररे,
चोहण ष थो मारो स्वामि प्रये प्रेम ॥
मारा महेल थी सुग्व छे केवुँ तारे मुँ पटेरे ॥३०॥

जसमा—राना आलोके परलोकं मारोये पतिरे
प्रितेपरणया माटे छोडूँ मारा प्राण
एना शत्रुनुँ हुँ मुख क्दी जोतीनथीरे ॥३१॥

एवुँ कहीने जसमा टोपलु लेइपाछीफरीरे,
राय लीधोवलतो पाटण केरो पथ,
घइछे जसमा ना पतिव्रत नी ग्यातरीरे ॥३२॥

राजा जममानीरस्सी थी वि-हल तो थयोरे,
निशदिन आवे मनमा जसमाना विचार,
एनी सुख तरस्ना निद्रा सहुँ ऊडी गयारे ॥ ३३ ॥

लालचेई जसमा ने वश करवा उतर्यारे,
बल थी करवी मारे एने मुज आधीन,
एवो पापी निश्चय राना ए मनमा कर्यारे ॥ ३४ ॥

अहिया जसमा ए पण वात वधीपतिने करीरे,
कलियुग थासियो छे आ राजाना दरमाय,
भाव टकाणे न रहेवु लानिम जरीनहीरे ॥ ३५ ॥

बीना ओडलोगो सहु आवाते दुखिया थयारे,
आव्यो न मरेनो राना उपर रोश

मोदापरोडमा सहु पाटण छोडी निसर्यारे ॥ ३६ ॥

राजा बीज दहाडे जसमा ने जोवा गयोरे,
कीधु जसमा साटे असमानु दर्शन,
एने क्रोधाग्नि नो जोर सर्वांग व्यापियोरे ॥ ३७ ॥

राजा दुर्बुद्धि थी जसमानी पुठ पड्योरे,
साथे सर्व सजेला लीधा घोडेस्वार
अधवचरस्ते राजा ओडो ने जाई अड्योरे ॥ ३८ ॥

रूडा ओडो शुरा टेकी मालव देशनारे,
हलका मजूर छता जातिनो अभिमान
जसमा खातर मौ ए आव्या मरण आवशमारे ॥ ३९ ॥

आपणे जीवता राजा जसमा ने शु लईजशोरे,
इज्जत जाता जीवतर विकमल्यु गिणाय
परहित मरता प्रभू स्वर्ग तणां सुख आपशोरे ॥ ४० ॥

जसमा अडग उभी रही राजा ने विनति करेरे,
राजा रक्षकनोने सिन्सताये आम
हुँतो पूज्य भाव थी पितागणी नें उपरुरे ॥ ४१ ॥

राजा रक्षक थइ रीद भक्षक थाए अमतणोरे,
नथी नथी घटतो नृप ने आवो अत्याचार।
तारी उज्वल कीर्ति जोतामां मलनीथशेरे ॥ ४२ ॥

म्हारे तो राजा के महाराजा आ मारो पतिरे,

मालवान्तर्गत डूगर प्रान्त से ओड लोगों को बुलवाया गया था उनमें 'टीकम' ओड और उसकी पत्नी जसमा ओडण भी थी।

जसमा युवति होने के साथ २ सुन्दराकृति भी थी। जिसको तालाब की पाल पर मिट्टी डाल कर आती हुई गुर्जर सम्राट महाराजा सिद्धराज ने देखी। देखते ही उस पर मोहित होकर उसको अपने महलों में लेजा कर रानी बनाने के लिये महाराजा ने कई प्रकार से अनुनय करते हुए अनेक प्रलोभन दिये परन्तु जसमा उन प्रलोभनों में जरा भी न फसी सती का जवाब सुनकर महाराज को भी दंग रह जाना पड़ा। जब कोई दूसरा उपाय शेष न रहा तो सती ने अपने नैतिक धर्म पर अडिग रहकर इन्द्रिय संयम और धीरता का परिचय देते हुये अपना बलिदान देकर संसार के सामने स्त्री धर्म का उच्च आदर्श उपस्थित किया है।

जसमा का जीवन तो पवित्र था ही परन्तु उसमें इन्द्रिय संयम और मनोबल भी उच्च कोटि का था। क्योंकि महाराजा सिद्धराज ने उसे लुभाने के लिये खान पान, वस्त्राभूषण, शान शान, महल मन्दिर आदि पदार्थों का आमन्त्रण किया था। इतना ही नहीं अत्याग्रह भी किया था परन्तु वह अपना जीवन पवित्र बनाय रखने के लिये इन पदार्थों को विघ्न रूप समझती थी इसलिये उसने इन्हीं भोग्योपभोग्य पदार्थों को न जगल के रहवास को महत्व दिया जिससे कि अपना जीवन पवित्र बना रहे। आज उत्तम उत्तम घराने की स्त्रियां ने अपना खान पान रहन सहन इतना बिगाड़ लिया है कि यद्यपि व पवित्र जीवन

बिताती होगी परन्तु लोक व्यवहार में उनका जीवन शका शील ही माना जायेगा।

धर्म रक्षा व कर्तव्य पालन सादा वेष भूषा और सादगीपूर्ण रहन सहन से ही धरा जाता है नखरे वाली पोशाक से नहीं। अब तो अनेक उत्तम जाति कुलकी अङ्गनाए अपने खान पान, मोज शोक तथा ऐशो आराम के पीछे अपने धर्म कर्म को ही भूल रही हैं। और अपनी जाति, समाज और देश को कलंकित कर रही हैं। इतना ही नहीं मोका पड़ने पर कायरता का परिचय दकर गुण्डाओं की शिकार बन जाती हैं। जरामा विकट प्रसग देखते ही वे खुद तो घबरावें ही पर कुटुम्ब के मनुष्यों को भी घबरा कर उन्हें हिम्मतहार बना देती हैं। उनके लिये जसमा का यह चरित्र बोध पाठस्वरूप बनेगा।

जसमा महाराजा के डराने धमकाने पर भी क्षुभित होकर अपना आपा न भूली परन्तु दृढता के साथ जैसा का तैसा जवाब दिया जिससे महाराजा भी आगे बढ़ने का साहस न कर सके और न बलात्कार ही। साथ ही साथ इस चरित्र में गुजरात के महामन्त्री शान्तु महेता की विवेक शीलता, दूरदर्शीता, एवं प्रत्येक बात की सावधानी आश्चर्योत्पादक है। महाराजा के कृपा पात्र होने पर भी हां में हां न मिलाते हुए महाराजा के पंजे में फंसी हुई जसमा को मुक्त कराने के लिये निर्भीकता पूर्ण सत्य ? सुना देना कम महत्व की बात नहीं है। ऐसे मन्त्री जिस राज्य में हो वह राज्य, वह देश समार में उन्नत क्यों न हो।

यद्यपि उस समय भारत में यवन, बादशाहों का प्रवेश हो चुका

था फिर भी भारत के लोग परतन्त्र और पराधीन नहीं बने थे व अपने देश व धर्म की रक्षा करने में कटिबद्ध थे। गुलामों से डर कर जान बचा लेना पसन्द नहीं करते थे अपितु वीरता पूर्वक मुकाबला करके हंसते २ प्राण दे देना अपना कर्तव्य मानते थे।

'शान्तुमहता' क्षत्रिय नहीं अपितु वणिक* कौम का था और जैन धर्मी श्रावक था आचार्य श्री हेमचन्द्र सूरि का उपासक था वह दोनों समय प्रति क्रमण तथा धर्माराधन करता था और देश रक्षा के लिये प्रसंग उपस्थित होने पर शस्त्रों से सुसज्जित होकर युद्ध में भी उतर जाता था उत्तर में काश्मीर तक जाकर जिसने तलवार बजाई थी और गुजरात को महागुजरात बनाने की चेष्टा की थी।

ऐसे २ पुरुष व ऐसी २ स्त्रियें ही देश और धर्म की रक्षा कर सकते हैं जब कोई जैसी सामान्य हिन्दु जाति में भी इस प्रकार का धर्माभिमान था तो उस समय की भारतीय उच्च जातियों में धर्माभिमान और सत्व रक्षा किस सीमा तक पहुँची हुई होनी चाहिये यही विचारणीय है।

अन्त में भारत के सपूतों और सन्नारियों से आग्रह करता हूं कि वे फैशन की फांसी को काटें और अपने धर्म की रक्षा के लिये इस आदर्श चरित्र को पढे और वे भाव अपने में भरें जिस से अपने धर्म कर्म की रक्षा करने में समर्थ बनसके। इत्यलम् —लेखक

---

*यहां वणीक से मतलब वणीया बक्काल का नहीं परन्तु वाणिक का अर्थ हरएक उच्चनीच स्थिति में बना रहे उन्नति के समय अहकार में आकर फूले नहीं और अवनत में अधीर नहीं बने वही सच्चा वणिक है।



भारतीय आदर्श नारी

अर्थात्

सती जसमा



सहस्रलिंग तालाब



प्रथिव्यां त्रीणि रत्नानि, जलमन्न सुभाषितम् ।
मूढै पाषाण खण्डेषु, रत्नसंज्ञा विधियते ॥ १

विद्वानों ने इस पृथ्वी पर तीन प्रकार के पदार्थों को रत्न माने हैं यथा—जल, अन्न और सुभाषित (वाक्य) क्योंकि इनके द्वारा संसार का कल्याण हो सकता है, प्राण धारण किये जा सकते हैं, और जीवन आनन्दमय बनाया जा सकता है। परन्तु मूढ़ लोगों ने इन रत्नों को भूल कर पाषाण के टुकड़ों को ही यानी हीरा, पन्ना, माणिक आदि को ही रत्न संज्ञा दे रखी है। परन्तु ये रत्न तो जीवन को सुखी बनाने के बदले कई दफा महा दुःखी बना देते हैं। पर जल अन्न और हितकर वचन का प्रयोग तो महा पुरुष भी करते हैं इसलिये पूर्वकाल के नृपति (राजा) प्रजा के कल्याणार्थ ऐसे स्थानों की अपने राज्य में सुविधा करते रहते थे जो इस प्रकरण में दिखाई देंगे।

काम जल्दी और फुर्ती से करो निरीक्षक ने कहा।

जल्दी कैसे करें बापू ? बेलदार बोला।

कुदाली के दो प्रहार ज्यादा मारो और दो टोकरी ज्यादा उठवाओ।

यदि ऐसा न हो तो ? बेलदार ने प्रश्न किया

पैसे कट जावेंगे। निरीक्षक ने रुखाई का प्रदर्शन किया।

हम दिन (दाहडी) मजदूरी नहीं करते हैं बापू ? काम (उधड़ा) और ठेके में लिया है। बेलदार ने वास्तविकता को सामने रखी।

हां उधड़ा लिया इससे अपनी मरजी मूजिब करना क्या ? ऐसा नहीं चलेगा, मजदूरी नहीं मिलेगी । परीक्षक ने कहा ।

नहीं मिलेगी तो हम लोग खाएंगे क्या बापु ? ऐसा, कहते कहते बेलदार ने कुदालीका एक प्रहार जमीन पर किया । मिट्टी का एक बड़ा ढेफा उखड़]आया । उस पर आधी कुदाली मारने से ढेफा मिट्टी के रूप में परिणित हो गया और चारों ओर रजकण उठे ।

हाँ ! काम ऐसे होता है । तुम काम जल्दी करोगे तो पैसे भी जल्दी मिलेंगे और उतने ही मिलेंगे परन्तु खोदने वालों को इतनी बात सुनने का भी अवकाश कहा था और जरूरत भी क्या थी ।

बेलदार ने पास में मिट्टी का ढेर पड़ा हुआ देख कर बुम मारी अरे ! कहां गये सब ?

यह रही । पीछे से एक युवती की आवाज आयी । तूही इस तरह ढील करेगी तो दूसरे तो काम करेंगे ही कैसे ? बेलदार ओड ने कहा ।

छोकरा रोता हो तो उसे (हींचा) झूला भी न दूं ? युवति ने शान्ति के साथ जवाब दिया ।

खोदने वाले ओड (बेलदार) के समक्ष युवति की उम्र आधी थी । दोनों के रूप और सौन्दर्य में जमीन आसमान जितना अन्तर था । परन्तु दोनों का प्रेम घनिष्ट था । दोनों परस्पर सतुष्ट थे । ओड ने कुदाली को एक हाथ में पकड़ करे एक हाथ युवति के कन्धे

सब साथ साथ ही खाते थे। इससे काम स्वेच्छापूर्वक करते थे किन्तु बेगारी की तरह नहीं। ओड लोगों का सरदार टीकम खुद भी काम करता था इससे दूसरे साथी लोग भी काम चित्त लगा कर अच्छी तरह करते थे।

ग्रहणकरने योग्य शिक्षा —

१—इस प्रकरण में यह दिखाया गया है कि सरकारी मुसद्दी लोग बेचारे गरीब मजूर वर्ग पर अपना रोब गालिब करने के लिये किस प्रकार धौंस और डाट डपट देते हैं तथा उन्हें अनुचित रीति से तंग करते हैं। २—पूर्व काल के महाराजा राज्य कोष को अपनी निजि सम्पत्ति नहीं मान कर बतौर ट्रस्टी के रक्षा करते थे तथा उसे प्रजा के हित में ही खर्च करते थे और इस तरह राजा एवं प्रजा का सम्बन्ध प्रतिदिन घनिष्ट होकर एक दूसरे के सुख दुःख के संविभागी बनते थे। आज महीनों और वर्षों तक प्रजा को राजा लोगों के दर्शन ही नहीं होते, न एक दूसरे के वास्तविक सुख दुःख को जान ही सकते। अपितु कर्मचारी लोग उलटी सुलटी कह कर राजा और प्रजा में किस प्रकार मनमुटाव करादेते हैं। जहां राजा और प्रजा का सीधा सम्बन्ध है वहां दोनों तरफ का कुशल है और उसी राज्य की उन्नति है।





पूर्व स्मृति और मोह का उद्भव



मनुष्य तभी तक नीतिमान, धर्मपरायण और धर्मात्मा बना रहता है जब तक कि वह किसी सुन्दराकृति वाली मनमोहनी स्त्री को नहीं देख पाता। परन्तु जब कभी ऐसी नव-यौवना सुन्दरी अचानक देखने में आ जाय और फिर भी उसके प्रति वह ध्यान नहीं दे, उसके लिये कवि कहता है कि,

धन्यास्तएव तरलायत लोचनानां ।
तारूण्यरूप पयपीनपयोधराणाम् ॥

श्यामोदरापरिलस त्रिवलीलताताम्,

दृष्ट्वा कृतिं विकृतिं मेति मनोने येषाम् ॥ १ ॥

(भर्तृहरि श्रृंगार शतक)

भावार्थ—वह पुरुष वास्तव में धन्यवाद का पात्र है जो चपल व बड़े बड़े नेत्रवाली, यौवन में मद-मस्त, दृढ़ एवं पुष्ट स्तनों वाली तथा निसक दुबले व पतले उदर पर त्रिवली लता शोभ रही है ऐसी स्त्रियों की आकृति देखकर भी जिस पुरुष का मन विरक्त नहीं होता है। शेष तो इस प्रकार का आकर्षण सामने आते ही खिंच जाते हैं और अपने गौरव को भूल जाते हैं सो इस प्रकरण में ही दिखाई देगा।

बेलदार ! तुम खुद काम न करते हुए केवल ध्यान ही रखते रहो न ? निरीक्षक टूथमल ने कहा।

यदि ऐसा करने लगूं तो ये मेरे हाड हराम के न हो जायँ ? बेलदार ने स्पष्ट उत्तर दिया।

दिन भर खड़ा रहना और दूसरों से काम लेना यह भी एक जात की मेहनत ही कहलाती है। टूथमल ने कहा। खड़ा रहना और बैठना यह तो आप लोगों को ही शोभे बापु ? हमारे तो कुदाली भली और धरती भली, पावड़ा भला और मिट्टी भली। दिन के समय धरती माता को घण घणाना और रात को इसी की गोदी

में आराम करना। मैं अब स्वय काम नहीं करूं और केवल हुक्म ही चलाता रहूँ तो साथ वाले क्या काम करें? जितना काम हम स्वय करें उतना ही हमारे लाभ में है। ओड लोगों के मुखिये टीकम बेलदार ने जवाब दिया। दुधमल थाबड़ा बात करता करता आगे बढ़ा कि उस की दृष्टि एक दम सामने की तरफ पड़ी जिधर से महाराजा सिद्धराज मुंजाल महेता के साथ तालाब पर पधार रहे थे। महाराज को आते देख कर वह कुछ दूरी तक सामने गया और राजसी ठाठ से उसने महाराज का अभिवादन किया व एक तरफ खड़ा हो गया।

महाराजा सिद्धराज ने सरोवर पर दृष्टि डाली तो अर्ध भाग खुद गया था।

काम बराबर चलता है न? महाराजा ने पूछा। जी । दुधमल ने अदब से जवाब दिया। अब कितने दिन और लगेंगे? महाराजा ने प्रश्न किया। ओड लोगों के नायक बेलदार को पूछें दुधमल बोला। चलो, कह कर महाराजा आगे बढे। दुधमल महाराजा के पीछे पीछे हो लिया। दोनों ओड लोगों के नायक टीकम ओड जहा काम करता था, वहा आये। प्रात काल जैसी ही ताकत और ताजगी से सायकाल हो जाने पर भी काम हो रहा था। ओड लोगों की कुदालियें जमीन को भेद रही थी। उपरा उपरी प्रहारों से पृथ्वी धम धमा रही थी और उन ओड लोगों के शिशकारों के साथ ही मिट्टी के ढेफे निकल आते थे। प्रस्वेद के

बिन्दुओं से उन ओड लोगोंके बदन तरबतर हो रहे थे। ऊपरसे मिट्टी के रजकण उड़ उड़ कर उनके बदन को रंग रहे थे। ओड लोगों का स्त्रियें टोकरियें भर भर कर सरोवर की पाल पर व्यवस्थितरूप से डाल रही थीं कभी २ हास्यवश थोड़ी मिट्टी लेकर अपने पति पर उछाल कर विनोद भी करती जाती थीं। इस प्रकार की मजूरी करते हुए भी आनन्दानुभव कर लेते थे। जितना सुखी और निश्चिन्त जीवन मजदूरी करनेवाले लोगों का होता है। उतना लाखों करोड़ों का धन्धा करने वाले श्रीमन्तों का भी नहीं होता। कारण वे रात दिन किसी न किसी चिन्ता में घिरे ही रहते हैं। समय पर न खाते, न पीते, न सोते, न आनन्द ही करते। रात को सोते हुए स्वप्न भी वैसे ही देखते रहते हैं। जैसी कि उनको कार्य की चिन्ता होती है। इसी से नीतिकार ने कहा है कि—

सन्तोषामृततृप्तानां, यत्सुखशान्तिरेव च ॥
नचतद्धनलुब्धानां, मितश्चेतश्चधावताम् ॥

(चाणक्यनीतिदर्पण)

भावार्थ—सन्तोष रूपी अमृत का सेवन करने वालों को जो सुख और शान्ति का अनुभव होता है। वह धन के लोभियों को नहीं कारण वे इधर से उधर भटकते ही रहते हैं।

महाराणा को आते हुए देख कर उन ओड लोगों ने भी कुदालियें उछालना बन्द कर दी और एक हाथ में कुदालियें थाम कर

दूसरे हाथ से महाराना का अभिवादन किया। महाराजा भी सबका मुजरा लेते हुए खडे रहे।

अभी कितने दिन और लगेंगे ? महाराना ने प्रश्न किया।

अब अधिक दिन नहीं लगेंगे परन्तु जितने दिन लगे हैं उतने तो लगेंगे ही। और जमीन को साफ तथा एकसी करने में कुछ दिन विशेष भी लगे। ओडों के नायक ने जवाब दिया।

नहर तरफ खुदाया ? महाराज ने दूसरा प्रश्न किया।
नहीं बापु। यह तो सबसे पीछे लिया जायगा।

अच्छा—कह कर महाराजा आगे बढे। जाते समय सामने आती हुई एक युवति को देखी जिसके हाथ में खाली टोकरी थी और वह तालाब के किनारे पर से आ रही थी देखते ही महाराजा सिद्धराज चमके। बार बार उसको देख कर पहचान गये कि यह स्त्री वही है जिसको राजगढ की छत पर से उस रोज मैंने देखी थी। युवति ने अभी यौवन की सपाटी पर पैर रखा ही है अर्थात् किशोरावस्था पार करके पुर्यौवनावस्था को प्राप्त की है।

जब महाराजा सिद्धराज और राज्यमाता मीनलदेवी सोमनाथ महादेव की यात्रा से पधारे थे। तब प्रजाने बहुत ठाठ के साथ आपको नगर में प्रवेश कराया था। जगह जगह महाराजा को हार तोरादि अर्पण करके सत्कार किया था। यह ओडण भी उस रोज सवारी देखने के लिये राज्य दुर्ग की छत पर

चढ़ गई थी और वहां से महाराजा को अघ्य अर्पित करने की सद्भावना से इसने भी महाराजा पर पुष्प वृष्टि की थी। उस समय महाराजा ने ऊपर दृष्टि फैलाते हुए इसे देखी थी वही स्मरण महाराजा को इस समय हो आया। इधर यह युवति (ओडणी) टोकरी में मिट्टी भर कर उठा रही थी उस समय फिर इसी उस समय उसके देह के त्रिभग में महाराजा को सौन्दर्य का अपूर्व आविर्भाव दिखाई दिया। इस समय जो हाथ मिट्टी खुद रहे थे, इन्हा कोमल हाथों ने मेरे पर पुष्प बर्षाये थे। अर्थात् जो हाथ कठिन थे, उनमें भी महाराजा को कोमलता दिखलाई दी। मिट्टी से भरा हुआ उसका शरीर होली खेलने के बाद मदोन्मत्त दिखाई देते हुये नवयौवनासा मोहक दिखाई देने लगा।

ओडणी (असमा) मिट्टी डालने के लिये सरोवर के काठा तरफ चली जिसके साथ २ महाराजा का मन भी खिंचता चला। हुकमल ? महाराजा ने पुकारा। जी, कह कर हुकमल आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा। ओड लोगों के नायक को कहना कि काम जल्दी से करें यह फरमाकर महाराजा मुजाल महेता के साथ आगे बढ़े। खुदे हुए तालाब के चारों ओर चक्कर लगा कर देखा। परन्तु सब देखते हुए भी महाराजा की दृष्टि उस ओड युवति के प्रति खिंच रही थी। आखिर घूमते घामते महाराजा और महेता दोनों एक बरगद के झाड़ के नीचे आकर खड़े होगये।

ओडण मिट्टी डालकर उसी झाड़ के नीचे आई जहां महा

राजा और मुं जाल महेता खड़े थे। महाराजा और महेता को खड़े देखकर वह शर्मागई और पीछी फिरकर जहां ओड लोग खोद रहे थे वहां आकर बोली।

आज तो बालक ने मुझे बहुत हैरान किया नींद तो लेता ही नहीं। जाती या आती बार झूला दे आना। बच्चा ही तो ठहरा ओड बेलदार ने कहा। परन्तु महाराजा खड़े हैं। ओडण ने अपनी कठिनाई प्रदर्शित की। कहां ? यह कर बेलदार ने एडी उठाकर खड़े खड़े नजर टाली। महाराजा झाड नीचे खड़े थे और मुं जाल तालाब के काठे खड़ा हुआ कुछ मालूम कर रहा था।

बच्चे ने अपने बाल स्वभावानुसार झोली में कुदाकुद की और रुदन करने लगा।

मैं किस तरह वहां जाऊं। ओडण युवति ने कहा। इसमें अपने को कैसी शर्म ? ओडने जवाब दिया। लज्जा नहीं आने ? लज्जा तो स्त्री का भूषण है न। तुम भी अजब आदमी हो—कह कर मिट्टी से भरी हुई टोकरी युवति ने माथे पर उठाई और तालाब के काठे डालकर झाड़के नीचे रोते हुए बालक को झूला देने के वास्ते सकुचाती हुई आई।

आखिर हिम्मत करके आगे बढ़ी और बच्चे को झूला देकर टोकरी हाथ में लेती हुई महाराजा की तरफ तिरछी नजर डाल पीछे लौट चली। आगे जाकर फिर एक नजर डाली। महाराजा वहां के वहां ही खड़े हुए टकटकी लगाये सब देख रहे थे।

ग्रहण करने योग्य शिक्षा—

१—इस प्रकरण में टीकम ओड और दुधमल चावडा के सम्वाद में यह दिखाया गया है कि उस जमाने के लोग काम करने में ही अपना महत्व मानते थे, खाली बैठे रहने और दूसरों के ऊपर हुक्म चलाने में नहीं। इसी से उन लोगों के शरीर तन्दुरुस्त एवं बलवान होते थे। २—जीवन का जो आनन्द सामान्य मनुष्य ले सकते हैं वह श्रीमन्त और राजसी ठाठ वाले दम्पत्ति नहीं ले सकते, कारण उनका जीवन अनेक झंझटों में फंसा हुआ रहता है इसलिये समय पर जब दम्पत्ति मिलते हैं तो उनमें विकार का प्रादुर्भाव शीघ्र हो जाता है किन्तु शुद्ध प्रेम का तो अभाव सा ही रहता है। ३—स्त्री का परिचय और स्मृति एक ऐसी बलाय है कि बडे बडे ऋषि मुनियों को भी अपने स्थान से गिरा देती है तो सामान्य मनुष्य का कहना ही क्या। इसीलिये ब्रह्मचारी को स्त्री परिचय सहवास और पूर्व स्मरण से सदा बचते रहना चाहिये अन्यथा उसका ब्रह्मचर्य खतरे में आ पड़ता है और कई साधु नाम धराकर पतित होगये हैं। ४—लज्जा सकुचाना और टेढ़ी होकर चलना स्त्री के भूषण हैं पर ये ही क्रिया कामी के लिये शूल है। भर्तृहरि ने भी इसे प्रमाणित किया है।



कर्त्तव्य पथ के साथ ही साथ लालसा का प्रभाव

अधमाधनमिच्छन्ति, धनमानचमध्यमाः ॥
उत्तमामानमिच्छन्ति, मानोहिमहताधनम् ॥ १ ॥

(चाणक्य नीति दर्पण)

भावार्थ—अधम जन धन को ही चाहते हैं। मध्यम जन धन और मान दोनों को चाहते हैं। परन्तु उत्तम जन हैं वे मान ही चाहते हैं क्योंकि मान ही उनका उत्कृष्ट धन है।

जहां मान है, प्रतिष्ठा है वहीं वे सब कुछ देखते हैं परन्तु जहां प्रतिष्ठा को आघात पहुँचता हो, वहां वे न धन की परवाह करते हैं, न तन की ही किन्तु प्राणों की बाजी लगाकर भी वे संसार में स्वप्रतिष्ठा की रक्षा करना चाहते हैं।

महाराना सिद्धराज, भी उन पुरुषों में से थ जो उत्तम जन में माने जाते हैं इसलिये वे मालव पति के उनकी सोमेश्वर की यात्रा गमन के समय किये हुए आक्रमण का महामात्य शान्तु महता ने समयानुकूल समाधान किया। इसे भी अपनी प्रतिष्ठा में कलंक मानकर उसे भूलने के लिये क्या करते हैं सो इस प्रकरण में दिखाई देगा।

पाटण के अन्दर आज महाराना सिद्धराज का दरबार भरा हुआ है। बड़े बड़े सरदार, योद्धा और मंत्री मंडल विद्यमान हैं। वातावरण उग्र बन रहा है महाराना के साथ ही साथ सब सभा सद्गण जोश में आये हुए हैं और किसी विशेष हुक्म की प्रतीक्षा कर रहे हैं केवल अन्तिम निर्णय होकर हुक्म होना ही शेष है।

महाराना सिद्धराज और राज्य माता मिनलदेवी जिस समय सोमेश्वर की यात्रा को गये थे। उस समय मौका देखकर मालव नरेश ने पाटण पर धावा बोल दिया था। बहुत सैन्यबल महाराजा के साथ गया हुआ था इसलिये पाटण में सैन्यबल बहुत ही कम रह गया था।

महाऽमात्य शान्तुमहेता ने महाराजा की गैर मौजूदगी में इतने अल्प सख्यक सैन्य से मालवपति के साथ युद्ध करने में प्रजा की कुशल न देखी। इसलिये हर्जाने की कुछ रकम देकर प्रजा को कष्ट से बचाने के लिये मालवपति से सन्धि करली थी। परन्तु यह सन्धि कर लेना और दण्ड की रकम देना महाराजा के हृदय मे काँटे की तरह चुभा करती थी। अत इस विषय में महाराजा ने आस पास के लोगों के बहकाने से महाऽमात्य महेताजी पर नाराज होकर महाऽमात्य पद ले लेने की चेष्टा की थी। परन्तु राज्य माता मिनल देवी ने बीच में पड़कर वह मामला शान्त कर दिया था। तो भी मालवा पर चढाई करके बदलालेने की सर्व सम्मति से तय करके तैयारी की गई। लाव लश्कर मालवा की तरफ रवाना कर दिया गया। महाराजा कल रवाने होंगे क्योंकि कितनेक गैर मौजूद सरदारों व प्रधान मन्त्रीयों को बुलवाये गये और उन्हें महाराजा के साथ जाना होगा ऐसा तय हुवा था।

इधर पन्द्रह रोज हुए जब से महाराजा ने जसमा को तालाब पर देखी थी। महाराजा का चित्त हमेशा व्यग्र रहा करता था उन्हें जरा भी चैन नहीं पड़ता था। बात करते करते भी व्यग्र बन जाते थे। परन्तु सब कोई ये ही समझते थे कि मालव नरेश को जीतने की धुन सवार हो रही है। जिससे ये इतने व्यग्र बने हुए हैं। महाऽमात्य शान्तुमहेता और राज्यमाता मीनलदेवी भी खास

घाव को न जान सके। राज्य माता तो उलटी इसे पुत्र का उत्साह मान कर पुलकित हो उठती थी।

महाराजा को जब भी जसमा याद आती कि वे तालाब पर पधार जाते और उसे देखकर कोई न कोई चेष्टा करते ही रहते। इन पन्द्रह दिन में एक भी दिन ऐसा नहीं निकला होगा जिस रोज महाराजा सरोवर पर नहीं पधारे हों। सरोवर पर जाकर ओड़ लोगों से तथा उनके नायक से बातें करते तथा जिस झाड़ के नीचे जसमा के बच्चे की झोली बन्धती थी, उसी झाड़ के नीचे जाकर विश्राम लेते थे। बच्चे को झूला देने आती जाती हुई उस ओडण युवती को देखा करते और मौका लगे तो बातचीत करने का भी प्रयत्न करते। पहले तो महाराजा तालाब पर पधारते, तब मंत्री मंडल में से किसी न किसी को साथ लाते किन्तु धीरे २ उन लोगों को साथ लाना भी बन्द कर दिया था। इतना ही नहीं, वहां काम की देखरेख करने वाले आबड़ और मुं जाल महेता की भी नजर चुकाने का प्रयत्न करते रहते थे। पर उन चतुर मुत्सद्दियों ने बात को भापली और मर्म को पहुँच गये। इसलिये वे खुद टाला ले लेते थे।

जब मनुष्य के हृदय में कामाग्नि प्रवेश कर जाती है, तब वह अपना भान भूल जाता है और अपनी प्रेयसी को प्राप्त करने की हर तरह चेष्टा करता है। परन्तु कोई तो बिना सोचे समझे एक दम कूद पड़ता है और कोई चतुराई से काम लेता है। यह शनै शनै

आगे बढ़ता है। महाराजा सिद्धराज भी चतुर थे। इससे उन्होंने युक्ति से काम लेना पसन्द किया था।

एक रोज महाराजा कुछ जल्दी आगये थे। यद्यपि मध्याह्न बीत चूका था परन्तु समय अभी बहुत बाकी था। धूप कड़ाके की पड़ रही थी। दुधमल चावड़ा और महाराजा दोनों सरोवर के काँठे काठे फिर रहे थे। काम झड़पसें चल रहा था। कुदालियों के प्रहार से धरती धणधणा रही थी। ओड लोगों की स्त्रियें मिट्टी की टोकरीयें भर भर कर सरोवर की पाल पर डाल रही थीं।

महाराजा को ऐसी धूप में पधारते हुए देखकर लोग आश्चर्यान्वित हुये। नजदीक पधारने पर ओड लोगों ने व ओडके नायक ने कुदाली को हाथ में दाब कर महाराजा का अभिवादन किया। ओड सरदार बोला महाराज! आज ऐसी तेज धूप में?

वक्त मिले तब, आया जाय न! महाराजा ने उत्तर दिया। सूर्य का ताप यद्यपि प्रखर था, परन्तु वह ओड लोगों को असह्य नहीं होताथा। पसीने पसीने होजाने पर भी उनका काम तो चालू ही था। फिरते फिरते महाराजा तालाब के काठे आये और गर्मी से घबरा कर दुधमल से कहने लगे।

दुधमल—पानी चाहिये

महाराज—उसी को बुलवालें। दुधमल ने कहा। किसको? महाराजा ने प्रश्न किया।

यही श्रोट की नौ जसमा थी। दुधमलने महाराना से हँसते हुये कहा।

खुशामदिये लोग अपनी पूछ होने तथा स्वार्थ साधन के लिए अपने स्वामी को उचित अर्ज न करते हुए पतन के मार्ग में आगे बढ़ाने को मददगार हो जाते हैं। इतने में जसमा मिट्टी डालकर जाने लगी। उसको बुलवाकर दुधमलने महाराना के लिये पानी लाने को कहा।

जसमा जहां पानी की झोली बंधी हुई थी वहां आई। घनी डालियां व अरण्य झाड़ से नीचे धूप नहीं थी। इससे वहां ठण्डक थी। जसमा ने मटकी में से ठंडा पानी भरकर शरमाते हुए पानी का प्याला लाकर महाराना के सामने खड़ी हुई। 'लेऊं' कह कर जसमा के हाथ में से पानी का प्याला लेते हुए दुधमल की तरफ देखकर महाराजा ने प्रश्न किया। जसमा चुप रही।

प्याले में से पानी पीते ?, तुम्हारा ही नाम जसमा है?
महाराजा ने फिर दूसरा प्रश्न किया।

अपना नाम महाराना के मुंह से सुन कर जसमा एक दम शरमा गई और लज्जा की रेखा उसके मुख पर पड़ते ही उसका सौन्दर्य अधिक खिल उठा। जसमा ने महाराजा को तीन चार बार इसी झाड़ के नीचे देखा था और एक बार बोलने का भी प्रसंग बन आया था। इससे उसने टूक में ही जवाब दिया

'जी' राजा पानी पी गया और फिर दूसरी बार मांगा।

जसमा! तू ऐसी कड़ी धूप कैसे सहती होगी?

महाराजा ने प्रश्न किया।

क्या करें, महाराज! हमारे क्या राज्य है! मजदूरी करते हैं और गुजारा चलाते हैं। जसमा ने पानी का पात्र दूसरी बार देते हुए नजर दूसरी तरफ रखकर जवाब दिया।

परन्तु ऐसी धूप में? महाराजा ने फिर प्रश्न किया।

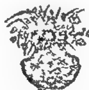
नहीं तो कैसे पूरा पड़े? बोलते बोलते देरी अधिक हो जाने से जसमा ने खोदाती हुई जमीन की तरफ नजर डाली और अपने पति को काम करता हुआ देखकर झोली में सोते हुये बालक को झूला देती हुई वहां से चली गई।

महाराजा देखते ही रह गये परन्तु महाराजा की इच्छा उसे प्राप्त करने के लिये बढ़ने लगी।

ग्रहण करने योग्य शिक्षाः—

१—जिस मनुष्य के हृदय में किसी स्त्री को देखकर विकार प्रज्वलित हो उठता है उसे यही धुन लग जाती है कि इसे मैं कैसे प्राप्त करूं और अपनी प्रेयसी बनाऊं उस लालसा के वेग में आकर वह अपना आपा तक भूल जाता है। अपनी एवं अपने पूर्वजों की इज्जत का जरा भी खयाल नहीं रखता हुआ ऐसे २

प्रपंच रचता है। कैसा माया जाल फैलाता है जिसे समझना बड़ी ही कठिन समस्या है। २—इस फंद में फसा हुआ मनुष्य अकृत्य एवं सभी कुकृत्य कर डालता है और अपना इहलोक परलोक दोनों बिगाड़ डालता है। इसीलिये शास्त्रकारों ने स्त्री संसर्ग से बचते रहने के लिये खूब सावधानी रखने का कहा है। ३—अपने मालिक को ऐसे चुंगल में फंसे हुए देखकर आसपास के लोग उनका पतन करने में किस प्रकार मददगार हो जाते हैं। और किसी निर्दोष मनुष्य को कैसा फंसा देते हैं यह दुधमल की युक्ति से प्रकट है। ४—कामी लोग स्त्री के आगे कैसे नम्र होकर प्रेम दर्शाते हैं और उसे अपनी तरफ आकृष्ट करने के लिये कैसी युक्ति से काम लेते हैं यह भी इसमें बताया गया है।





अक्षोभन



निरखिनेनवयौवना, नेहन आयोलगार ॥
गणेकाष्टकीपुतली, ते भगवान समान ॥१॥

(श्रीमद्राजचन्द्र के उद्गार)

वे मनुष्य वास्तव में पूज्य हैं जो साक्षात् काम स्वरूपा, सौन्दर्य मूर्ति, नव यौवना स्त्री को देखकर भी विचलित नहीं होते किन्तु अपने निज स्वरूप में ही स्थित रहते हैं। उनको कवि ने तो भगवान की उपमा देदी है। किन्तु विचार करते हुए यह उपमा अतिशयोक्ति नहीं है क्योंकि इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र और नरेन्द्र भी

जिसकी आँख के इशारे पर नाचते रहते हैं उस मनोहरा स्त्री को देखकर जो क्षुब्ध नहीं होते। वे मनुष्य तो क्या देवों के भी पूज्य हैं ऐसे महापुरुष तो बहुत ही कम हैं। सारा संसार ही इसके फंदे में फंस कर उसे अपना आधीन करने के लिये आकाश पाताल एक कर डालते हैं और उचित अनुचित सभी उपाय काम में लेते हैं। न बोलने जैसे वचन भी बोलते हैं और स्त्री के दास होकर रहना भी स्वीकार करते हुए नहीं सकुचाते। गुर्जर सम्राट महाराजा सिद्धराज भी एक मजदूरनी के सौन्दर्य पर मुग्ध हुए क्या २ चेष्टा करते हैं सो दिखाया जाता है।

जब से महाराजा ने जसमा को सरोवर पर काम करती हुई देखी है और उसके हाथ से पानी पीकर बातचीत की है। उसके बाद तो प्रति दिन सरोवर पर जाना और प्रसंग पाकर बातचीत करके उसे अपनाना महाराजा सिद्धराज का ध्येय बन चुका था। इससे वे टाइम बे टाइम जब मरजी हो तभी सरोवर पर पहुँच जाते थे। एक दिन फिर सरोवर की पाल पर खड़े हुये महाराजा को विचार मग्न देख कर दुधमल ने कहा—

क्यों महाराज ?

क्यों क्या ? महाराजा ने कहा।

क्या विचार करते थे ? दुधमल ने पूछा।

कुछ नहीं। जिस रोज से महाराजा ने पानी पिया था। दुधमल के साथ निकट मैत्री सी होगई थी। आज प्रात काल ही महा-

राज सरोवर पर पधार गए थे। खुदाई का काम पूरी तेजी से चल रहा था। आज सरोवर पर इधर उधर नहीं फिरते हुए उसी झाड़ के नीचे खड़े होगये थे। जहां बच्चे की झोली बन्धी हुई थी दुधमल भी खड़ा खड़ा बातें कर रहा था। जसमा को झूला देने के लिये आती हुई देख कर दुधमल जरा दूर हट गया। सकुचाती हुई जसमा झूला देकर रवाना हुई। पीछे से धीमी आवाज आई जसमा। जसमा ने रुककर पीछे देखा तो महाराजा थे। जसमा स्थिर खड़ी रही। फिर आवाज आई जसमा। वह फिर भी चुपचाप खड़ी ही रही।

जसमा! ऐसी मेहनत करने के लिये तेरा सर्जन हुआ हो यह मैं नहीं मानता। फिर क्यों तू इस तरह अपना जीवन बरबाद कर रही है। महाराजा ने बात आगे बढ़ाई।

क्या करें, महाराज! हमारा धन्धा ही ऐसा है। जसमा ने धीरे से सकुचाते हुए महाराजा को उत्तर दिया।

मैं तुम्हारे लिये यह सुविधा किये देता हूँ कि तुम आज से तालाब की पाल पर बैठी हुई अपने बच्चे का पालन किया करो। मिट्टी मत उठाया करो। मिट्टी उठाने वाली तो बहुत हैं महाराजा ने अपना प्रस्ताव रक्खा।

आप मालिक हैं। इसलिये ऐसी कृपा दर्शाते हैं। परन्तु मैं बिना मेहनत किये हराम का खाना नहीं चाहती। मेहनत करना मैं अच्छा समझती हूं। मेरा स्वभाव दूसरी ही तरह का है।

जसमा ने बहुत अदब के साथ उत्तर दिया।

जसमा ! तेरा शरीर सुकुमारता का घर है। इससे मिट्टी उठाना सुवर्ण के थाल में धूल भरने जैसा है। इसकी कदर तो कोई कदरदान ही कर सकता है। सब कोई नहीं कर सकते। तू मिट्टी ढोकर इसका नाश मत कर। महाराज ने प्रेम प्रदर्शित करते हुए कहा।

महाराज ! बिना मेहनत किये बैठे बैठे खाने से कई प्रकार के रोग होजाते हैं। मुझे भी कोई रोग हो जाये और डाक्टर लोग फीस मांगें तो हम मजदूर लोग कहां से लावें ? हम मजदूरों के पास धन कहां है।

हिस्ट्रीया का रोग जिसे पुराणीस्त्रियें भेड़ा चढ़ा कहती हैं और जिसके होजाने पर अक्सर देवी देवताओं पीरों के स्थान पर ले जाना पड़ता है यह प्राय परिश्रम न करते हुये बैठे बैठे खाने से ही हो जाता है। यह रोग जितना गरीब स्त्रियों को नहीं होता, उतना धनवान स्त्रियों को अधिक होता है। जहाँ आलस्य है परिश्रम नहीं किया जाता वहाँ यह रोग जल्दी लागू होता है फिर डाक्टरों की हाजरी और देवी देवताओं की मिन्नतें करनी पड़ती हैं। महाराज ! मैं ऐसा करना नहीं चाहती। मेरा काम अच्छी तरह चल रहा है परिश्रम करने से मेरा शरीर स्वस्थ रहता है आप फिकर न करें।

जसमा ने महाराज से कहा।

जसमा ! मैं फिर भी कहता हूँ कि तू जगल में बसने के लिये

नहीं है। देख तो यह तेरा सुकोमल बदन जगलों में भटकने के का बिल नहीं है। चल मेरे शहर में, पाटण शहर इस समय बिलकुल स्वर्ग बन रहा है तुझे शहर में अच्छी जगह रहने को दिला दूंगा।

कृपा भाव दर्शाते हुए महाराज ने कहा।

जसमा समझ गई कि राजा का पहला दाव न चलने से दूसरा पासा फेंका और मुझे लोभ दे रहा है।

महाराज कहा तो यह आनन्ददायक जगल और कहा गन्दा नगर ? जिस प्रकार गर्मी के मारे कीडे मकोडे भूमि में से निकल कर रेंगते हैं उसी प्रकार शहरों के तंग मार्ग में मनुष्य फिरते हैं। वहा अच्छी तरह चलने को मार्ग भी पूरा नहीं मिलता और जगल में तो सदा ही मगल है। ऐसी शुद्ध स्वच्छ वायु और विस्तृत स्थान शहरों में कहां है ? जसमा ने उत्तर दिया।

राजा सोचने लगा कि यह तो इस पांसे में भी नहीं फंसी अब क्या करना चाहिये। तुरन्त ही बात करने के ढग को बदल कर महाराजा ने कहा।

जसमा ! तेरी बुद्धि बिगडी हुई है। गिवारों को गिवारपना ही अच्छा लगता है। इसी से तू ऐसी बातें कर रही है। अधिक मनुष्यों के बीच में रहना बड़े भाग्य से ही मिलता है। शहरों का वास देववास होने से बड़ा ही अच्छा है। तू इनके मगज की ठहरी। खांसरे की [illegible]कोली (सानी) [illegible]

क्या जाने। इसी तरह तू जंगल की रहने वाली शहरों के मजे को क्या समझे, चल में तुझे शहर में रहने के लिये अच्छा स्थान दूंगा। महाराजा ने डाट डपट कर फिर लालच दिखाया।

चाहे मेरी ढिठाई या गिवारपन समझें। सची बात तो यह है कि आपको जैसा नगर प्रिय है वैसा मुझे जंगल प्रिय है। शहरों के आदमी जैसे मैले मन के होते हैं वैसे जंगल के रहने वाले नहीं।

बड़े २ शहर आज पाप के किले बन रहे हैं। चोर, जुआरी, व्यभिचारी, नशेबाज, भंगेड़ी, गंजेडी आदि सभी तरह के विकारी मनुष्य शहरों में ही होते हैं। शहरों के बहुत से लोग तो सत्संग में (धर्म स्थान में) भी विकारों से भरे हुए आते हैं और अपने विकार पोषण करते हैं। देहातों में ये बातें अधिकांश नहीं होती यह सोना चांदी का जेवर भी किसी का पड़ा रह जावे तो देहाती लोग उसके मालिक को ढूंढ़कर उसे पहुँचाने की चेष्टा करेंगे। यह बात शहरों में नहीं है। शहरों में तो छोटी से छोटी वस्तु के लिये भी परस्पर हत्या करने को नहीं चूकते हैं तथा शहरों में रोग भी अधिक होते हैं। इस लिये डाक्टर लोग उन्हें शहर से बाहिर जंगल में रहने की सलाह देते हैं। असमा ने निर्भिकता से उत्तर दिया।

परन्तु तेरा रूप और सौन्दर्य तो महलों को शोभायें ऐसा है।

महाराजा ने उसे फुसलाने के लिये कहा।

असमा अभी तक जहाँ की तहाँ खड़ी थी। प्रात काल का समय होने पर भी मिहनत और परिश्रम से प्रस्वेद के बिन्दु ललाट पर

मोतियों की दमक दे रहे थे। अपनी साड़ी के पल्ले से ललाट को पोंछती हुई उसने राजा की तरफ देखा। परन्तु महाराज को अपने इस प्रश्न का कुछ भी प्रत्युर न मिलने से उन्होंने तुरन्त ही बात को बदल दी।

तेरा पति कहा है? जिस पर तू इतना गर्व कर रही है। मैं भी तो उसे देखू वह कैसा है।

वह जो कमर कस कर काम कर रहा है और जिस के शिर पर फूल का गुच्छा है। उंगली के इशारे से जसमा ने बताया। क्या तालाब में ही है? महाराज ने पूछा।

हाँ! कहकर जसमा झूले की तरफ गई और बच्चे को झूला देकर अपने काम में लगने के लिये चली परन्तु पीछे से ओढणी का पल्ला खेंचा गया—

महाराज यह क्या? पीछे से महाराज ने पल्ला पकड़ रखा था जिसे देख कर जसमा बोली।

क्या वही तेरा पति है। कहो तू और कहा वह कौए के गले में रत्नों की माला? उस मिट्टी खोदने वाले के पीछे इतनी इतरा रही है? और मेरा निरादर कर रही है। हसनी कौए के पास नहीं शोभती। इसलिये हंसनी को कौए के पास रहने देना ठीक नहीं है। तू महल को चल। तू तो महलों में ही शोभेगी। देख तेरे ऊपर तेरे पति को विश्वास ही नहीं है। वह तेरी तरफ टेढ़ा-

उसका देखने का ढंग ही यह स्पष्ट बतला रहा है कि तेरे पर न तो उसका विश्वास ही है न प्रेम ही। ऐसा आदमी तेरी क्या कदर जाने ? ऐसे अविश्वासी पति के पास रहना क्या तुझे उचित है ?

टीकम ओड ने उस समय राजा की तरफ इसलिये देखा था कि मेरी पत्नी से क्या बातें कर रहे हैं ?

महाराज ! सच्चे को समार में जरा भी भय नहीं है। मेरे पति का मेरे प्रति पूर्ण विश्वास है। मैं अपने पति के सिवाय अन्य पुरुषों को भाई मानती हूँ। यह अविश्वास तो आप लोगों में होता है। हमारे में तो आज तक ही अविश्वास का काम नहीं। मेरे मन में यदि पति के प्रति अविश्वास हो तो पति को मेरे प्रति अविश्वास हो। मेरा पति मुझे नहीं देख रहा है। परन्तु आपकी बिगड़ी हुई दृष्टि को। जसमा ने वैसा ही निर्भीकता से उत्तर दिया।

जसमा। तू मिट्टी उठा उठा कर डाले यह मुझ से देखा नहीं जाता। तेरे जैसी नाजुक स्त्री इस तरह अपने मानव देह का ह्रास करे यह मुझे असह्य हो रहा है। इसलिये तू मेरे महलों में चल। वही बुरी बातें छोड़ कर महाराज ने मुझे की बात कही। गुर्जर समाट को इस तरह बातें करते हुये देख कर जसमा से न रहा गया। यद्यपि सिद्ध राज एक बड़ा राजा था परन्तु जसमा को इससे भी अपना स्वमान अधिक अभीष्ट था। इसलिये राजा के कथन की परवाह न करते हुए जसमा ने कहा

महाराज ! हम तो मजदूर हैं। मिट्टी उठाये बिना काम कैसे चले। परन्तु आपके महलों में रानियों की क्या कमी है ?

परन्तु तू एक बार महल तो देख आ। महाराजा ने कहा।

महाराज ! पाटण के महलों में रहने की अपेक्षा में अपने गरीबी झोपड़े को किसी तरह कम नहीं समझती हूं। राजा की रानी होने के बदले एक ग्रामीण ओड की स्त्री कहलाना मुझे अधिक पसन्द है। जसमा ने स्पष्ट उत्तर दिया।

किन्तु तेरे रूप और हुस्न के पास, ।

महाराजा आगे बोलना ही चाहते थे। इतने में ही जसमा ने कहा।

महाराज ! यह बात जाने दो। मेरे रूप की आपने कदर की तो भले ही की। परन्तु यह शरीर तो झोपड़ी में ही रहने को है। अब मुझे जाने दीजिये। आप राजा हैं, मैं रैयत हूं। गुजरात के महाराजा होकर आपको ऐसा काम और ऐसी याचना करना नहीं शोभती। जरा ख्याल रखिये।

मैं कहता हूं उसे मान इतने में ही जसमा महाराज के बीच में ही बोल उठी।

आज आपने मेरे साथ ऐसी बात की। कल आपकी नजर दूसरी तरफ ढलेगी। यही गती रही तो पाटण के नरेश पर कौन विश्वास करेगा। इसलिये यहाँ से पधारिये और महलों में रहकर आपकी [illegible] को ही आपके महल के सुख और वैभव दीजिये।

गुजरात के अन्दर ऐस भी राजा लोग होते हैं इसकी खबर आज ही पडी। यह कहने के साथ ही पल्ला छुड़ाकर जसमा एक दम आगे बढ़ी। पिछाड़ी बंधा झोली में रो रहा था। उसकी भी सुनाई नहीं थी। जाती हुई जसमा को राजा देखता ही रह गया पर एक शब्द भी उसके मुँह से नहीं निकला।

मिट्टी से प्लावित साड़ी के अन्दर ढका हुआ उसका गौर वर्ण सूर्य की किरणों को पीछे हटा कर अजब चमक दे रहा था। उसकी चाल (यद्यपि वह जमीन खोदने वाली जाति की थी किन्तु) इतनी मृदु थी कि कहीं चलते हुए धरती माता को किसी प्रकार कष्ट न होन पावे। महाराजा उसकी चाल को देखते ही रह गये और अपने मन ही मन में उसकी प्रशंसा करने लगे।

महाराजा आप यहाँ कहाँ से। झाड़ के पीछे से आवाज आई।

महाराज सिद्धराज ने पीछे फिरकर देखा तो पूछने वाला आंबड था। यह भी महाराज के मंत्रीमण्डल में का एक सभासद था तथा प्रधान मंत्री शान्तु महेता का खास विश्वासपात्र था।

आंबड! तू यहाँ कहाँ से? महाराजा ने प्रश्न किया

महाराज! मैं तो दिन में दो तीन बार काम देखने को आया करता हूँ। ऐसा बोलते हुए आम्बड की नजर झाड़ की डाली के नीचे लटकती हुई झोली की तरफ और वहां से खिसक कर जाती हुई ओडण युवती की तरफ गई और उसके हृदय में एक प्रश्न पैदा हुआ कि, क्या महाराजा इससे मिलने के लिये यहां आते हैं?

ग्रहण करने योग्य शिक्षा—

१ इस प्रकरण में दिखाया गया है कि जो मनुष्य कामान्ध हो जाता है वह यह नहीं सोचता कि मैं कौन हूँ। किस कुल में उत्पन्न हुआ हूँ। मेरी व मेरे खान दान की कैसी प्रतिष्ठा है और मैं यह क्या कर रहा हूँ। मैंने जब विवाह किया था तब मेरी पत्नी को मैंने क्या २ अधिकार दिये थे। उसे क्या २ विश्वास दिया था और अब उसका हक उसका अधिकार दूसरी को देने का मुझे क्या हक है।

२ वह उचित और अनुचित रीति से उसे लालच विश्वास देकर अपनी तरफ रजू करने की पूरी चेष्टा करता है। हर तरह लाचारी और आजीजी भी करता है परन्तु जो चतुर स्त्री होती है वह उसके दम्भ (झांसे) में नहीं आती और अपने शील धर्म एव पतिव्रत धर्म को ही आदर्श मान कर उन लालच भरे वचनों को ठुकरा देती है। किन्तु जो मूर्ख स्त्रियें होती हैं वे दम्भ में आकर भ्रष्ट हो जाती हैं, वे न घर की रहती न घाट की।





सखियों का विनोद

संसार के अन्दर मनुष्य को अपने हृदय का भार हलका
और असमंजस में पड़े हुए को मार्ग का प्रदर्शन करने के
यदि कोई स्थान है तो वह केवल मित्र ही है। मित्र ही
ाप रूप गर्मी से सूखते हुए हृदय रूपी बगीचे को सिंचन करने
रम सहायक है। कहा है कि—

पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यंचगूहतिगुणान् प्रकटीकरोति ॥
आपद्गतंच न जहाति ददातिकाले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्तिसन्तः ॥ १ ॥

(भर्तृहरिनीति शतक

भावार्थ—पाप करते हुए को रोके और उसके हित का उपदेश करे, गुप्त बात को छिपावे और गुणों को प्रकट करे, आपत्ति काल में साथ न छोड़े और समय पड़ने पर यथा शक्ति द्रव्यादि से सहायता करे। इस प्रकार संत पुरुषों ने उत्तम मित्रों के ये लक्षण बताये हैं। जसमा भी अपनी सखि के यहाँ जाकर किस प्रकार बातचीत करके अपना हृदय खाली करती है सो दिखाया जाता है।

रम्भा बहन! जसमा ने नीचे से आवाज़ दी।

कौन! ऊपर से आवाज़ आयी।

यह तो मैं हूँ! जसमा ने अपनी पहचान कराई।

रम्भा ने नीचे उतर कर किवाड़ खोले और आगन्तुक को पहचान कर कौन! जसमा बहन?

हाँ! बहन! जसमा ने कहा।

इस समय कैसे! रम्भा ने आने का कारण पूछा।

लो, क्या मिलने को भी न आऊँ? पाँच दिन पहले मिल गई थी। आज फिर तबीयत हुई कि मिल आऊँ। जसमा ने जबाब दिया।

आओ बहन! कहकर रम्भा जसमा को अपने कमरे में ले गई।

जसमा और रम्भा यद्यपि बहनें तो नहीं थी परन्तु जसमा के पाटण आने के बाद इन दोनों की परस्पर घनिष्ठता बढ़ गई थी। दोनों ही एक मोहल्ले में रहती थी। नजदीक होने से आते

को सुगमता थी। जसमा रम्भा के यहाँ कई बार आती और सुख दुःख की प्रेम भरी बातें कर जाती थी। इन दोनों में गाढ़ सम्बन्ध होने का यह भी कारण था कि वा आंवड भाई तालाब की देख रेख करने को दिन में दो तीन बार आते जाते थे और रम्भा इनकी पत्नी होने वाली थी। इनका सम्बन्ध हो गया था। रम्भा के द्वारा कई बातें जसमा को राज्य प्रबंध की जानने को मिलती थी। रम्भा और जसमा दोनों मिलनसार, व हँस मुख थी। इस कारण इनकी प्रीति प्रतिदिन बढ़ती ही जाती थी। कोई कोई वक्त बातों के रंग में पड़ती तब एक दूसरी की हँसी मसखरी भी कर लेती थी।

इन दिनों आंवड भाई तालाब पर नहीं पधारते? जसमा ने पूछा। गये होंगे कोट गढ़ि मारने को। रम्भा ने नाक सिकोड़ते हुए कहा।

मालूम होता है कि तुमने भी उनको नहीं देखा है? और उनके जाने की खबर तुम्हें भी नहीं है। जसमा ने रम्भा की बात में से सार भाग खींच कर सामने रखा।

क्या तुम्हीं हर रोज देखती ही रहती होगी? रम्भा ने कहा।

बहन, मैं तो हर रोज ही देखती व सेवा करती रहती हूँ। जसमा ने कहा।

तुम लोगों की बात जुदी है। रम्भा ने जवाब दिया।

हाँ। मेरा तो लग्न भी हो गया है। जसमा ने कहा।

और पुत्र की माता भी तो हो चुकी हो। रम्भा ने हसते हुए कहा।

लो, इसमें क्या ? यह तो संसार की रीति है जसमा ने हास्य को रोकते हुए कहा।

मैं तो अब देश में जाने का विचार कर रही हूँ।

जसमा ने बात की शुरुआत की।

तुम या तुम्हारे घर वाले ? रम्भा ने व्यंग में पूछा।

मैं और ये क्या अलग २ हैं। जसमा ने जवाब दिया।

सरोवर पूरा खुद चुका ? रम्भा ने प्रश्न किया।

नहीं। जसमा ने उत्तर दिया।

तब ? रम्भा ने फिर प्रश्न किया।

अधूरा छोड़ कर ही जावेंगे। जसमा ने कहा।

काम पूरा करने से पहले राज्य मजूरी दे देवेगा ?

नहीं देवे तो कुछ परवाह नहीं हमतो मजदूर हैं। और कहीं मजदूरी करेंगे। ऐसे अनीति के पैसे नहीं चाहिये। जसमा मूल बात पर आई।

अनीति, किस बात की बहन ? रम्भा को इसका रहस्य मालूम नहीं पड़ा इसलिये प्रश्न किया।

दूसरा क्या बहन ! अब यह धरती (भूमि) भारी पड़ती जाती है और मेरी जन्मभूमि आवाज दे रही है कि आती रह मालवा में। जसमा ने व्यंग में कहा।

परन्तु क्या बात हुई, यह तो कह। रम्भा ने उत्सुकता प्रकट की।

हुई क्या ? मन उब गया ? जसमा ने बात को छिपाते हुए कहा।

पर कुछ कारण तो होगा ?

रम्भा ने कारण जानने की आतुरता प्रकट की।

कारण ? कारण क्या कहूँ बहन कहते हुए जबान नहीं उठती।

असमा ने ठंडी आह भरते हुये कहा।

आखिर कुछ कहोगी भी नाम ठाम भी बताओगी।

रम्भा ने सांत्वना दिखाते हुए उत्सुकता दर्शाई।

बहन क्या कहूँ—खुद महाराजा सिद्धराज गुर्जरसम्राट की मेरे पर नियत बिगड़ी हुई है।

असमा ने धीरे [illegible] वास्तविकता का आभास कराया।

क्या कहती हो बहन ? रम्भा सुनकर स्तब्ध होगई।

सच्ची बात है बहन ? असमा ने विश्वास दिखाते [illegible] कहा।

तुम्हारे पतिदेव इस बात को जानते हैं। रम्भा ने प्रश्न किया।

नहीं, मैंने अभी उनके आगे बात नहीं की है यदि कहूँ तो बात बिगड़ जावे और परिणाम न जाने क्या हो।

असमा ने गम्भीरता से कहा।

परन्तु अपन महाराजा के सामने ही नहीं देखें तो ?

रम्भा ने प्रश्न किया।

अपन नहीं देखें परन्तु महाराजा देखें इसका क्या उपाय। और राजा है रूठे या तूठे। रूठे तो पायमाल हो जावें यह तो जाहिरा बात है। बहन ! असमा ने भविष्य विचार कर कहा।

तुम्हारा भाई आवेगा तब मैं उनके आगे बात छेड़ कर पूछूंगी। रम्भा ने आँवड के बाबत में कहा।

नहीं ! नहीं ! उनको क्या कहना । नकी हुआ तो कल ही रवाना हो जायेंगे । असमा ने कहा ।

ऐसी क्या जल्दी है ? अभी वो डरने जैसी कोई बात नहीं है । रम्भा ने कहा ।

क्यों बहन ? असमाने उत्सुकता से पूछा ।

कल प्रात काल ही महाराजा मालवा पर चढाई करने जा रहे हैं । रम्भा ने कहा ।

पीछे कब आवेंगे ? असमा ने आतुरता से पूछा ।

विजय मिलेगी तब । कम से कम दो महीना तो लगेगा ही । वहा तक क्या तालाब की खुदाई का काम पूरा नहीं हो सकता ? रम्भा ने पूछा ।

जल्दी करें तो डेढ महीने में भी हो सकता है । असमा ने कहा ।

फिर की हुई मेहनत के ऊपर पानी क्यों फेरती हो । परन्तु महाराजा ऐसे दिखते तो नहीं हैं ।

रम्भा ने फिर बात को स्पष्ट करने के लिये छेड़ी ।

यही बात है न बहन ! किसी को कहें तो अपने को ही झूठा मानें । समार में तो प्रतिष्ठा एक बड़ी वस्तु है ।इसलिए उनके लिये सामान्य मनुष्य सची बात करे तो भी कोई नहीं मानता है । यह दुनिया का स्वभाव ही है । असमा ने कहा ।



दूरदर्शिता एवं हितशिक्षा



पद्माकर दिनकरो विकचौ करोति,
चन्द्रोविकाशयति कैरवचक्रवालम् ॥
नाभ्यर्थितो जलधरोपि जलंददाति,
सन्तःस्वयं परहिते सुकृताभियोगाः ॥ १ ॥

(भर्तृहरि नीतिशतक)

भावार्थ—सूर्य्य बिना यांचे ही स्वतः कमल के समूह को विकसित करता है। चन्द्रमा बिना यांचे ही कुमुदिनी को प्रफुल्लित करता है और मेघ बिना यांचे ही जल देता। ऐसे ही सन्तजन बिना यांचे ही पराये हित के लिये स्वयं उद्योग करते हैं।

यद्यपि स्वार्थ में अन्धा मनुष्य उपकारी का भी अपकार करने की चेष्टा करता है। परन्तु उत्तम जन उस अपकार को भूलकर अपकार करने वाले का भी हित ही करते हैं और उसे नेक सलाह ही देते हैं, जो इस प्रकरण में दिखाई देगा।

लगभग एक महिने से महाराजा सिद्धराज उज्जैन को चारों तरफ से घेरे हुये हैं। परन्तु शत्रु लोग जरा भी दाद नहीं देते। इधर पाटण में सहस्त्रलिंग तालाब का काम पूरा होने आया। रात दिन काम चलाया जाता था और पन्द्रह दिन में तो काम पूरा करके मेहनताना और लोगों को चूका दिया जायगा। ऐसे आसार दिखाई देते थे।

मुंजाल महेता को महाराजा सिद्धराज ने अपने पास मालवे बुलवाया।

मुंजाल शान्तु महेता के पास रहकर हरएक राज्यकीय कार्य में कुशल बन गया था, परन्तु महाऽमात्य शान्तु महेता जितनी दूरदर्शिता इसमें नहीं आई थी। तो भी महामात्य बनने को उत्सुक था और किसी न किसी प्रसंग की खोज में था। उसने मालवा जाने से पहले सरोवर पर आकर वहां की देख भाल की और दूधमल को बुलवा कर पूछा।

दूधमल ? क्या समाचार है।

तालाब का काम पूरा होने को है। दूधमल ने जवाब दिया।

बहुत तेजी से काम हुआ है। क्यों ? मुंजाल ने बात स्पष्ट करने को

हाँ, देखो न। अभी क्या आवश्यकता थी कि महामात्यजी ने रातों रात काम पक्का कर काम पूरा करने का फरमान निकाल दिया परन्तु मैं अब बड़ा असमंजस और मुश्किल में आ पड़ा हूँ। कूपमल बोला।

क्यों? मुंजाल ने पूछा।

महाराजा पधारते समय मुझे फरमा गये थे कि मेरी आज्ञा बिना कोट लोगों को पगार मत चुकाना। यह बात मैं महाऽमात्यजी को किस तरह कहूँ— कूपमल ने अपनी कठिनता व्यक्त की।

महाराजा किस लिये ऐसा फरमा गये हैं?

मुंजाल ने बात का मर्म जानने को पूछा।

यह तो मुझे क्या खबर? कूपमल ने कहा।

तब आज सायंकाल को मैं मालवे आता हूँ। महाराजा को कुछ अर्ज करानी है। मुंजाल मेहता ने कहा।

क्या कहलाना है। महाराजा खुद आकर काम तपास लें। कूपमल ने कहा।

परन्तु इसमें तो समय चाहिये। मुंजाल ने प्रश्न किया।

अभी पन्द्रह दिन का अवकाश है तो भी मेरा सन्देश तो महाराजा को पहुँचा देना। आगे उनकी इच्छा। कूपमल ने कहा।

अच्छा। मैं महाऽमात्य मेहताजी को भी कहूँगा। ऐसा कह कर मुंजाल वहाँ से रवाने हुआ और दुपहर के समय वह महाऽमात्य की हवेली आया। महाऽमात्यजी उस समय सोये हुए थे।

युक्ति पूर्वक उनको जगा कर के सुखपालो में ही बैठ गया ?
आज सायंकाल को जाना है न ? महाऽमात्य ने पूछा।

जी। मुँजाल ने संक्षेप में जवाब दिया।

तैयारी कर ली। मेहताजी ने पूछा।

क्या तैयारी करनी थी। एक सौ सवार साथ में ले जाता हूँ।
मुंजाल ने उत्तर दिया।

अच्छा कह कर महाऽमात्य शान्त रहे।

आपको नींद में से जगाने का कारण यह था कि महाराजा पधारते समय फरमा गये थे कि सरोवर खुद जाय तब मुझे खबर देना। मैं देख कर मेहनताना चुकाने का हुक्म देदू गा।

महाराजा देखें तभी हो—वे न देखें तो क्या नहीं चले ?
महाऽमात्य ने कहा।

मुझे हुक्म हुआ। वह मैंने आपसे अर्ज किया। मुंजाल का व्यक्तित्व महाऽमात्य के आगे दबता था। इसलिये परवारी छोड़दी। अपने ही सोचने की बात है कि महाराजा पीछे कब फिरेंगे इसका तो निश्चय नहीं। वहां तक ओड लोगों को रोक रखना और खर्च खिलाना यह ठीक है ?
महाऽमात्य ने रोष से कहा।

नहीं।

तब ?

ऐसा हो सकता है कि ओड के नायक टीकम को रोक लिया जाय। शेष लोगों को मेहनताना चुका दिया जाय। मुँजाल ने कहा

ऐसा कैसे हो ? महाऽमात्य ने कहा।

यह आप ही विचार सकते हैं। अगर मैं और कुछ कहूं तो महाराजा को भी बुरा लगे और आप को भी। मुंजाल ने कहा।

वाह ! मेरे को बुरा लगने न लगने की क्या बात है। महाराजा को बुरा न लगे यहां तक कहना तो ठीक था। यह दाल में काला मालूम होता है कि महाराजा तुझे फरमावें और मुझे न फरमावें ?

मैं तेरी बात का विश्वास नहीं करता ? महाऽमात्य ने कहा।

तब मैं क्या झूठ बोलता हूँ ? मुंजाल को कहा।

नहीं। झूठ नहीं तो अब सत्य होगा महाऽमात्य ने कहा।

मेरे ऐसा कहने और करने का कारण क्या ?

मुंजाल सफाई दिखाने लगा।

कारण है तभी तो तू इतनी सफाई पेश करता है। इस आवाज में महाऽमात्यपन की खुमारी नहीं परन्तु तेजी अवश्य थी। फिर बोले—तू मालवे जाता है तो महाराजा को अर्ज करना कि जसमा से भी अधिकाधिक रूपवती स्त्रियें आपको मिल जावेंगी। गुर्जर सम्राटपाटण के महाराजा को ऐसी मनोवृति शोभा नहीं देती। मगर मुंजाल यह तेरे लिये भी अच्छा नहीं कि अपने स्वार्थ वश होकर महाराज को ऐसे नीच कार्यों में सह योग देकर गड्ढे में ढकेले। राजा महाराजा तो राज्य में शोभा के स्थान रूप हैं। और सिर्फ राज्य के भूषण हैं। राज्य

की व्यवस्था का कार्यभार अपन लोगों पर ही है। न्याय तो अपन लोगोंके ही करने का होता है। उस पर मुहर मार कर कायदा का रूप देना महाराजा का काम है। तेरे जैसे मंत्री जो अपने स्वार्थ के खातिर ऐसे दलके कार्य में भाग लेने लगेंगे तो बहुत परिश्रमसे बनाया हुआ महागुजरातके टुकड़े होते कुछ भी देरी न लगेगी। महाराजा को तो चाहिये कि वह प्रजा का पुत्रवत् पालन करे। राजा को प्रजा का पालक व संरक्षक होना चाहिये। भक्षक होने में तू ही जब मददगार हो जायेगा तो गुजरात को महा गुजरात बनाने का स्वप्न धूल में मिल जायेगा। इस प्रकार कहते हुए अपने बोलने का असर मु जाल पर कैसा हो, यह महाऽमात्य देखते जाते थे और कहते जाते थे—

मु जाल तू ये मत समझना कि मैं मूर्ख हूं। कुछ नहीं जानता हूँ। महाऽमात्य पद प्राप्त करने के लिये अब तक तूँने क्या २ पासे फैंके हैं—क्या २ षड्यन्त्र रचे हैं ? और क्या २ खटपटें खड़ी की हैं। ये सब मैं जानता हूँ। परन्तु मैं दर गुजर करता हूं। मैं तुझे छोटे भाई की तरह मानता हूँ और राजनैतिक कार्य में आगे बढ़ाया है तथा—अब भी चाहता हूँ कि तेरी शक्ति सम्पूर्ण विकसित हो मेरे से भी तू सवाया हो। इसमें मुझे आनन्द है। गुजरात का एक २ मनुष्य उन्नतय ने यही मेरी कामना है। परन्तु वह गुजरात का रक्षक होना चाहिये, घातक नहीं। उसके हृदय में महागुजरात की भावना रमती रहे दूसरी नहीं। तेरे में गुजरात को महा गुजरात

रचने की भावना हो तो कह। मैं स्वयं तुझे महाऽमात्य पद सौंप देने को तैयार हूँ। मैं तो आज हूं और कल नहीं अधिक से अधिक तो दो चार वर्ष निकाले या नहीं। मैं तो दण्ड नायक हो चुका, मन्त्री भी हो चुका और महामन्त्रीश्वर की कांचली भी पहन कर उसकी जोखमदारी भी स्वीकार कर रखी है। मनुष्य को जो वस्तु दूर से अच्छी व सुन्दर लगती है वही निकट आने पर और प्राप्त करने के बाद जटिल सी बन जाती है। उसकी विषमता व कठिनाइयों का अनुभव होने लगता है। महाऽमात्य का पद कोई मोहक वस्तु या सम्मान का विषय नहीं है। परन्तु काटों का ताज है। खाली सेज नहीं परन्तु खड़ खचड़ी जगह है। जो सावधान न रहे तो मारा जाय और अपना राज्य का व प्रजा का अहित कर बैठे। मुंजाल ? तेरे से मैंने कई आशाएं मान रखी हैं तू उलट पुलट चल कर उनका उच्छेद मत कर।

मुंजाल के पास जवाब देने की शक्ति नहीं थी। न तैयारी ही की हुई थी वह आया तो रजा लने को था परन्तु महाऽमात्य के स्पष्ट वक्तव्य के आगे वह बहुत दब गया। बारीक २ बातों पर महाऽमात्यजी अबतक बराबर ध्यान रखते हैं। और मेरी खटपटों से ये पुरे वाकिफ हैं यह जानकर तो वह लज्जित होगया महाऽमात्यका कहना उसे अखरा। उसने कहा, कि :—

आपने यह कैसे जान लिया कि महाराजा जसमा को पैस के बहाने रोकने को सूचित कर गये हैं ?

तो दूसरा क्या समझा जाय ? महाऽमात्य ने हंसा दिया।

आप चाहे सो माने परन्तु मैं महाराजा को ऐसे कार्य में मदद करू यह कैसे मानते हो। सुजाल ने कहा।

नहीं—

सच ?

सुजाल ! लम्बी बात बढाने में मजा नहीं तू महाराजा को ऐसे कार्य में कभी मदद नहीं करे विरोध ही करे, यह मैं भी मानता हूँ तो भी तेरी मुराद पार पाडने के लिये तू, वसमा को सतरंज कि सोगटी बनाना चाहता है।

सुजाल चूपचाप सुन रहा था जो बात कोई जान नहीं सके ऐसी खबर महाऽमात्य को कहां से मिल गई यह उस की घड मथल का विषय बन गया।

सुजाल ? तू जा और कार्य फतह करके आना। मरी तुझे आशिष है बडो को अधिक से अधिक सुनना, समझना, और सहन करना चाहिये। मैंने तो कुछ नहीं किया है फिर भी मैं सब दर गुजर करक आशिष देता हूँ कि जा और फतह कर। सुजाल ने अचानक दोनों हाथ जोडकर शिर मिनमा दिया और चूपचाप बाहर हो चला।

ग्रहण करने योग्य शिक्षा—

१ इस प्रकरण में यह दिखलाया गया है कि सामान्य थोड़ा अधिकार मिल जाने पर योग्य पुरुष भी

दुरुपयोग करते हैं और आगे बढ़ने की उनकी महत्वाकांक्षा कितनी बढ़ जाती है। यह मुजाल महता के वर्णन से स्पष्ट होता है। २ उच्चाधिकारी योग्यता के कारण उच्चाधिकार पाकर भी भान नहीं भूलते परन्तु वे उस ठाटे के साज समान मानते हुए अपनी जवाबदारी को समझ कर सदा सजग रहते हैं और सब तरफ निगाह रखते हैं तथा अपने विरुद्ध प्रयत्न करने वालों को दमन से नहीं किन्तु उसकी हरकतों को हजम करके उसके ऊपर कृपा भाव दर्शाते हुए उसे अपने आधीन करते हैं यह शान्तु महता के वर्णन से दिखाई देता है। ३—उत्तम मनुष्य अपने स्वामी को गैर रास्ते जाते हुए देख कर उसमें उनके सहायक नहीं होते हैं परन्तु उनको सन्मार्ग पर लाने का ही प्रयत्न करते हैं और दूसरों को भी यही शिक्षा देते हैं—जो शान्तु महेता ने मुजाल को समझाया है। ४ प्रपंची लोगों का प्रपंच उन्हीं लोगों के पास कामयाब होता है जो साधारण समझके या बुद्दु है किन्तु जो चतुर है उनके आगे नहीं चलता। वे उसका भण्डा फोड़ करके उसे लज्जित कर देते हैं।



७

स्वार्थ का वेग

जातिर्यातुरसातलगुणगण, स्तस्याऽप्यधोगच्छता,
शीलशैलतटात्पतत्वभिजन, स न्दह्यतांवह्निना ॥
शौर्यवैरिणिवज्रमाशुनिपत, त्वर्थोऽस्तुनःकेवल,
येनैकेनविनागुणस्तृणलव, प्रायाःसमस्ताइमे ॥१॥

- (भर्तृहरि नीतिशतक)

भावार्थ—जाति चाहे रसातल में चली जावे, गुणों का समूह और भी उससे नीचे चले जावें, शील (सदाचार) पर्वत के शिखर से गिर कर उसके टुकड़े होजाये, इष्ट मित्र कुटुम्ब परिवार के लोग

चाहे ऋद्धि भ जल जायें और शौर्यता पर चाहे वज्रपात हो परन्तु मेरा अर्थ (धन) कायम रहे उसमें कोई विघ्न नहीं आवे क्योंकि इस एक के बिना सब गुण तृण के समान हैं। स्वार्थ सधते हुए ये रहे तो रहें और न रहें तो इनकी मुझे अपेक्षा नहीं है। ऐसे स्वार्थ भावना से सने हुए दिल पर किसी प्रकार के हितोपदेश का असर नहीं पड़ता यह प्रभाव स्वार्थ भावना जाग्रत होते ही कापुर हो जाती है और यही जहरीले विचार अपना अमल जमा लेते हैं सो इस प्रकरण में दिखाई देगा।

पाटण से निकल कर मुंजाल सीधा मालवा में आया महाऽमात्य श्री चातुर्यता एवं बचन प्रहार की शक्ति के आगे वह निर्बल बन गया था सो पाटण की सीमा तक तो उसकी दृष्टि में समस्त महाऽमात्य का व्यक्तित्व कायम रहा परन्तु धीरे २ हृदय के कौने में दबी हुई महत्वाकांक्षा ने अपना आक्रमण करना प्रारम्भ किया इससे उसका चित्त डावाडोल हो उठा। यद्यपि महाऽमात्य के उपकार उसके स्मृति पटल पर अंकित अवश्य थे। परन्तु महाऽमात्य पद की महत्वाकांक्षा ने उनको अधिक समय तक न टीकने देकर दूर किये।

वह विचारने लगा कि उपकार है तो क्या हुवा ? अपन भी महाऽमात्य पद प्राप्त करने के बाद उपकार का बदला प्रत्युपकार से दे देंगे, थोड़ी देर में फिर विचार धारा पलटी चाहे कुछ भी हो नेत्र बताने वाले तो येही हैं अब कितनेक बैठे रहेंगे ? पुरे वृद्ध हो

चूके हैं दो चार या पाच वर्ष बाद भी महाऽमात्य पद मुझे ही प्राप्त होगा क्यों प्रपच करू परन्तु फिर विचार आया कि बीच में कोई नयी आफत निकल आवे तो ?

स्वार्थ ऐसा चिकना पदार्थ है जिस पर कोई भी अच्छे विचार ठहर ही नहीं सकते चट से फिसल जाते हैं। इस प्रकार विचारों की घडमथल में मार्ग तय करके महाराज की छावणी में वह आय पहुचा और मौका पाकर माहाऽमात्य को मात करने की ठान ली। महाराजा को पाटण की व आसपास की परिस्थिति का परिचय कराते हुए उसने कहा कि—

महाराज। दुधमल न कहलाया है कि ओड लोग रात और दिन नहीं गिनते हुए काम कर रहे हैं छे सात रोज में काय पूर्ण हो जावेगा। उसने मेरा हुक्म महाऽमात्य को विदित किया कि नहीं ? महाराजा ने प्रश्न किया

उसी ने मुझसे कहा और मैं उन्हें कहे बिना रहूँ ? परन्तु महेता जी ने कहा कि महाराज को जो हुक्म करना था मुझे ही क्यों न फरमाया ? अभी पाटण के राज्य की जवाब दारी तो मेरे शिर पर है न ? मुंजाल ने बात को बना कर कही

ऐसा अभिमान बढ़ता जा रहा है। महाराजा मन में ही घुघ बाते हुए क्रोध मे आकर बोले-मरे राज्य में ऐसा महाऽमात्य नहीं चाहिये चाहे राज्य ही छिन्न भिन्न क्यों न हो जावे मुञ्जाल तू अभी का अभी पाटण जा और मैं हुक्म देता हूँ कि मेहता महा

ऽमात्य पद छोड़ कर तेरे सुपुर्द कर दूं।

महाराज ने आवेश में कहा

महाराज! उतावल मत करो मालवा जीत लेने के बाद जो करना हो वह करना। मूजाल ने बात को समालते हुए कहा

और अभी कुछ नहीं बिगड़ा है अब भी पाटण पधार सकते हैं। जो कल सायंकाल को निकल सको तो भी जिस रोज मेहनताना चूकाने का है उस रोज पाटण पहुँच सकते हैं या उससे पहले भी। अभी तालाब का काम कुछ बाकी है। मूजाल ने अर्ज की

मालवा की राज्यधानी उज्जैन को महाराजा सिद्धराज ने घेर रक्खा था और मालव पति को घबराने का प्रयत्न कर रहा था परन्तु मालवपति युद्ध में खुल्ले आम नहीं उतरता था। गुजरात का सैन्य शहर के प्रकोटा के पास डेरा तम्बू डाल कर पड़ा हुआ था कोन जीतेगा और कौन हारेगा यह निश्चित नहीं था इसलिये घेरा उठा कर पाटण जाने में भी नामोशी थी तब उसी रोज रात्रि में महाराजा सिद्धराज ने आनन्द पृथ्वीपाल दादक और वागभट को अपने डेरे में खानगी बुलाये और सलाह की, दूसरे ही दिन किसी को मालुम न पड़े इस तरह महाराजा सिद्धराज मूजाल व मदराज को साथ लेकर गुप्त रूप से पाटण तरफ निकल पड़े। रास्ते में पुरा आराम भी न लेते हुए जल्दी ही पाटण पहुँचा जाय ऐसी प्रवृत्ति धारण की हुई थी।

चार दिन के बाद गुजरात की सरहद में पहुँचने को ताकिद करते थे इतने में ही अचानक वे किसी व्यूह से घिर गये महाराजा

और मुजाल को कुछ भी समझ नहीं पड़ी कि यह क्या मामला है। अकला कर महाराजा के साथ सलाह कर के पीछे हटते हटते युद्ध करने का निश्चय किया मुजाल महेता ने शीघ्र ही हुक्म छोड़ा और एक हजार अश्व का सैन्य तैयार हो गया महाराजा को बीच म लिये और मुजाल सैन्य के अगले मोरचे पर जा टटका। परस्पर दोनों सैन्य मे जय सोमनाथ का आवाज होते ही युद्ध आरम्भ हो गया अब मुजाल को ज्ञात हुआ कि शत्रुओं को हमारे विदा होने की खबर मिलने से उन्होंने पुरी तैयारी के साथ हमारे ऊपर आक्रमण किया है। किसी भी तरह गुजरात की सरहद में प्रवेश करने का इनका इरादा था क्यों कि महाराना के दिल में एक दिन की ढील भी एक भव जितनी थी परन्तु शत्रु लोग इनकी युक्ति को जान गये और आक्रमण उसी रोज से चालु रखा।

तीन दिन वहाँ बीत गये घमसान युद्ध हुआ मुजाल महेता ने देखा कि आधे मनुष्य तो कट चुके हैं मदद के लिये पाटण सन्देश पहुँच सके ऐसी अब स्थिती रही नहीं इसलिये अब तो हारे बिना छुटकारा नहीं।

चौथे दिन उन्होंने मरणीये होकर लडने का निश्चय किया परन्तु गुजरात का सैन्य पिछड़ गया लड़ते लड़ते महाराना और मुजाल महेता दोनो घिर गये अब पकडाये बिना दुसरा उपाय ही क्या था ? परन्तु महाराना सिद्धराज के हाथ से अभी बहुत

काम होना शेष हैं इसलिए प्रकृति भी कुछ काम करती है। सामने कुछ दुरी पर से धूल उडती हुइ दिखाई दी। और शत्रु दल एक दम चमका सूयदेव नजर से बाहर हो गए ये जिस [illegible] स्पष्ट कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था केवल गुजरात की तरफ से धूल उडती हुई जोर से दिखाई दी विचार करते हैं इतने में तो जय सोमनाथ की ध्वनी चारो ओर से सुनाई दी इससे सिद्धराज और मुनाल को छोड कर शत्रु सैन्य में से उनके साथी भील लोग लस्कर सहित भाग गये और शत्रुओं का सरदार भी इस नवीन परस्थिती से घबराया उसने भी मौका देख कर एक दिशा पकड़ी महाराजा और मुजाल ने इस सुधरी हुई परिस्थिती का लाभ लेकर अपना रहा सहा बल एकत्रित कर के शत्रुओं का पिछा पकड़ा परन्तु थोडे आगे बढे कि एकदम चमके।

कौन! दुधमल? — महाराजा बोल्या।

जी। — दुधमल ने जवाब दिया।

तू कहा से आया? — महाराजाने प्रश्न किया।

पाटण से! — दुधमलने जवाब दिया।

पाटण से? — महाराजा ने कारण जानना चाहा।

जी। महेताजी महाऽमात्यजीने हुकम दिया जिसे तामिल करना पडे न? — दुधमल ने कहा।

ऐसा? महेताजी का नाम सुनकर मुजाल ने आश्चर्यव्यक्त किया।

महेता यहा है ? महाराजा सिद्धराज ने पूछा।

सैन्य के पीछे। दुधमल ने कहा।

और पाटण में ? महाराजा ने प्रश्न किया।

पाटण मे राज्यमाता और आंबडभाई हैं। दुधमल ने कहा।

सोरठ म से पाटण पर अणचिन्ता कोई हल्ला करे तो ?

महाराजा ने सशंकित बन कर पूछा।

तो राज्यमाता लडेगी। बीच में ही मुंजाल बोल उठा।

माताजी को लड़ने जैसी परिस्थिति ही नहीं मिले तो ?

महाराजा ने फिर प्रश्न किया

पाटण की रक्षा कर सके इतना सैन्य वहां रखा है।

दुधमल ने जवाब दिया।

महाराजा की समझ में नहीं आया कि सैन्य तो महेता साथ लाये हैं दूसरा मालवा में घेरा डाल रक्खा है तब पाटण मे कहां से रहे ? महाराजा ने शंकाव्यक्त की इतने में तो मसालें जली प्रकाश में महाराजा और मुंजाल मेहताने सैन्य को देखा तो महाराजा सिद्धराज के आश्चर्य का पार ही न रहा।

दुधमल यह क्या ? महाराजा ने पूछा।

महाराज सैन्य ? दुधमलने जवाब दिया।

ऐसा सैन्य ? महाराजा ने फिर साश्चर्य पूछा।

महाराज इस सैन्य से तो आप छूट ही सके हैं।

कहा परन्तु महाराजा ने इस व्यथा को नहीं समझा

थी मशालों के प्रकाश में ले चली जा रही थी। सैनिकों की संख्या पक्के लश्कर की बराबरी करने लगी थी, इस में घोड़े सवार भी थे नांद्री सवार भी थे। और पैदल भी थे कभी हाथ में तलवार नहीं उठाई ऐसे कृषक भी थे और तालाब खोदने वाले ओड भी थे सब कोई गुजरात के वीरों की पोशाक में सजे हुए थे।

पाटण महाराजा आगे सोचते हैं इतने में महाराज, इसलिवाय दूसरा उपाय ही नहीं था पाटण की रक्षा के लिये भी तो सैन्य चाहिये, आधा से अधिक तो मालवा के घेरे में है फिर लाना कहां से? इसलिये महाऽमात्यजी महेताजी ने बुद्धि उपार्जन की ओर पाटण से निकलने वाद बन सका इतना टोला इकट्ठा किया अपने शत्रुओं को केवल भय दिखाने को। इन में लड़ने वाला या मरने वाला कोई भी नहीं है। हमने आगे थे वे तो शत्रु के पीछे पड़े हैं। कितनीक बार वीरता काम देती है कितनीक बार भय और कितनी बार बुद्धि का कौशल्य भी।

तुम को हमारी खबर कहा से पड़ी? महाराजा ने पूछा

इतनी तो मुझे मालुम नहां-महाऽमात्यजी ने फरमान निकाला तभी खबर पड़ी दुधमल ने सत्य बात को सामने रखी

महेता कहां? महेता का नाम याद आते ही महाराजा ने पूछा शत्रु के पीछे पडे मालुम होते हैं कहकर दुधमल चला। मुंजाल चलो देखें कहकर सिद्धराज महेता की तरफ चले। महाराजा तीन चार सवार को लेकर आगे निकल गये।

महेता को मेरा ? किसी सैनिक से महाराजा ने पूछा

जी। वे तो प्रात काल पाटण पहुच जावेंगे।

एक सैनिक ने उत्तर दिया

जाते रहे ? महाराजा ने साश्चर्य पूछा

हा। उन्होने देखा कि जीत अपनी ही होगी कि तुरत विदा हो गये ? सैनिक ने उत्तर दिया

कहे विना ही ? महाराजा ने फिर कहा।

परन्तु वरत चाहिये न ? पाटण पर न मालुम किस समय आफत आ जावे राय खेंगार लाग देख रहा है।

सैनिक ने जवाब दिया

ठीक। कहकर सिद्धराज ने अश्व पीछा फेरा सैनिक ने भी अपना अश्व पीछे पीछे ही रखा।

अब निश्चन्तता थी इससे महाराजा को सोचने का समय मिला। मुजाल महता और महाऽमात्य शान्तु महता दोनों महाराजा के मगज में तूफान का विषय बन गये, महाऽमात्य महेता महाराजा के हृदय पर विजय प्राप्त करें इसके पहले ही मुंजाल सामने आता हुवा दिखाई दिया।

महाराज ? क्या पता मिला। मुंजाल ने पूछा

वे तो पाटण गये। महाराजा सिद्धराज ने कहा

हां सिद्धराज के पीछे आते हुए सैनिक के भी

मुजाल की दृष्टि पीछे आने वाले सैनिक पर पड़ी और वह चमका अपने अश्व को एक तरफ लेकर सैनिक के पास जाकर आश्चर्य व्यक्त करते हुऐ पूछा।

सरयू ? तू कहां से ?

सरयू ने कुछ जवाब न देने हुए ऊंगली उठाकर नाक पर स्थिर की इस अंगुली में इतनी ताकत थी कि मुजाल को चुप रहना पड़ा एक शब्द भी वह नहीं बोल सका।

ग्रहण करने योग्ये शिक्षा

१ इस प्रकरण में स्वार्थ पटुओं की प्रपच कला का आबेहुब परिचय होता है लालसा क्या नही करावी मनुष्य को ऐसा उलट देती है कि वह कुछ भी नहीं सोच सकता जो मुजाल महेता के वरणन से समझ में आवेगा २ उचाधिकारी कैसे कार्य कुशल एव दूरदर्शी होते हैं और वे स्वामिभक्त कैसे होते हैं यह शान्तु महेता के कार्य से स्पष्ट है। यदि महाऽमात्य चौतरफी खबरदारी नहीं रखते और महाराज को मदद नहीं भेजते तो महाराजा का गुन-रात सही सलामत पहुचना कठिन था पर यह महेताजी की कार्य कुशलता थी जो अपने मालिक को बालबाल बचालिया किन्तु यह सब प्रच्छन्न रह कर ही किया है आज तो कार्य कुछ भी करे या नहीं करे स्वामि को इतना स्थूल रूप दिखावे कि हमारे जैसा वैरग्वा शायद ही कोई हो इतना ही नहीं कोई२ कर्मचारी ऊपर से वफादारी दिखाव और अन्दर से जड़ खोखली करते हैं।



षड्यन्त्र



एकेसत्पुरूषाः परार्थघटका स्वार्थं परित्यज्यये ।
सामान्यतस्तु परार्थमुघममृतः स्वार्थाविरोधेनये ॥
तेऽमिमानुपराक्षसापरहित स्वार्थायनिघ्नातिये,
येरिध्नति निरर्थक परहित तेकेनजानिमहे ॥ १ ॥

(भर्तृहरिनीतिशतक)

भावार्थ—सत्यपुरुष वे हैं जो दूसरो के हित के लिये अपने स्वार्थ को छोड़ देते हैं। सामान्य पुरुष वे हैं जो परहित भी करे और साथ ही अपना स्वार्थ भी साधे। राक्षस पुरुष वे हैं जो अपने स्वार्थ के लिये परहित को नष्ट कर डालें। परन्तु जो अपना

स्वार्थ न होते हुए भी पराये हित में व्याघात करें, उसे क्या उपमा दी जाय ?

जसमा ने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा है जो उसके विरुद्ध किसी को प्रपंच रचना पड़े परन्तु स्वार्थी लोग अपना स्वार्थ साधन और महाराजा का कृपापात्र बनने के लिये कैसे २ षड्यन्त्र रचते हैं वह इस प्रकरण में दिखाई देगा।

अर्द्ध रात्रि बीत गई थी, गुजरात की सरहद में प्रवेश कर के सब आराम ले रहे थे श्रम के कारण सैनिक लोग नींद में खर्राटे भर रहे थे, उस समय मुंजाल महेता महाराज के तम्बू में कुछ सलाह कर रहा था।

महेता कैसे जाता रहा होगा ? — महाराजा ने कहा

कुछ पता नहीं चलता — मुंजाल ने जवाब दिया

तो अब क्या करना ? — महाराज ने अपनी कठिनता प्रदर्शित की

आप पाटण पधारो। — मुंजाल ने कहा

और तू ? — महाराजा ने प्रश्न किया

मैंने तो आपसे अर्ज की है कि मुझे तो मालवे जाना ही पड़ेगा इसका कारण यह है कि शत्रुओं की हिल चाल से पूरा सावधान रहने की जरूरत है — मुंजाल ने कारण बताया

वाह। यह ठीक, तू इन्कार करता था सो तो मैंने आग्रह करके साथ आने को कहा और अब बीच में छोड़कर जावेगा ? — महाराजा ने आग्रह किया

यों नहीं। शत्रु अपनी हिल चाल से पुरे वाकिफ हैं। नहीं तो वे अपने को बीच में घेरते नहीं मुंजाल ने मुद्दा बताया।

परन्तु वहाँ तो दादक वगैरा है न ? महाराजा बोले

यह बात सच्ची है परन्तु एक से दो अच्छे। आपको भी तो काम बनाकर पीछा फिरना है न ? मुंजाल ने टकोर का

तो फिर पाटण में मेरा क्या काम है ?

सिद्धराज ने बात को दबाने के लिये पकड़ी

दूसरा तो क्या है ? महेता बहा है ही राज्य माता भी है परन्तु आप खुद नजर रखो उसमें बहुत फरक पड़ता है। तालाब का काम भी कितना हुआ है कितना नहीं किस तरह होता है इसकी संभाल सबने रखी ही होगी। परन्तु आप देखलें यह सब से अच्छा है। मुंजाल ने बात को बना कर कही

ठीक! तू कहे वैसा करूं, परन्तु वहां की (मालवे की) नई पुरानी खबर देते रहना। महाराजा ने इजाजत दी।

जी! यह कर मुंजाल खड़ा हुआ और तम्बू के बाहर निकला परन्तु निकलते २ वह बोल उठा।
और महाराज

सिद्धराज का ध्यान आकर्षित हुआ और पूछा क्या ? मुंजाल की जबान पर रायूं का नाम आया परन्तु अदरय रह कर रोष

गालिय करते हुए सैनिक ने इशारा किया इससे वह चुप हुआ और बात बदल कर बोला। मेरे जाने की बात बाहर न पड़े ?

अब गुप्त क्या रहा ? महाराजा ने प्रश्न किया।

जितना रहा उतना तो रखना कह कर हसता हसता बाहर निकला और तैयार रहे हुए अश्व पर बैठे कर बाहर चला

मुजाल के जाने बाद महाराजा ने पहरे वाले को बुलाया ? पहरेवाला हाजिर हुआ और हुकम की प्रतिक्षा करने लगा। दुधमल बाघडा को बुलवाओ। महाराजा ने हुक्म दिया दुधमल हाजिर हुआ और पूछा क्या हुकम है ?

दुधमल क्या समस्या है ? महाराजा ने पूछा

महाराज महेता जी गये इस में मुझे वहम आता है दुधमल ने कहा

क्या ? महाराजा ने फिर पूछा

जसमा को आज की आज रवाने कर देगा। दुधमल ने कहा

तुझे क्या खबर ? महाराजा ने कारण पूछा

आपसे मिले बिना महेता जी जाते नहीं ? दुधमल ने अनुमान से कारण बताया।

पर अभी पहुँचेगा करेगा इतने में अपन भी पहुँचते हैं महाराजा ने बात को आगे बढाई।

यह सब ठीक परन्तु आप पहुँचेंगे यहाँ तक तो ये सब ठीक ठाक कर देंगे महाऽमात्य जी की कला को कोई नहीं पहुँचता दुधमल ने विचारणिय बात कही।

तो अब क्या करना चाहिये। महाराजा ने पूछा

करना क्या ? मैं अभी का अभी आऊ दुधमल ने कहा।

फिर महाराजाने पूछा।

महेता युद्ध (वहमथल) करे उस सब पर पानी फेर दू ।

दुधमल ने अपनी युक्ति रजू की।

किस तरह ? महाराजा ने पूछा।

कोई न जाने उस तरह। दुधमल ने महाराजा के पास खिसकते हुए कहा कि आपका दिवान खाना है यहा थोड़ी दूर पर दाई तरफ एक कमरा है उसमें केद थोड़ी बार अटक कर बोला और पूछा ठीक है न।

हा ठीक है। महाराजा ने स्वीकार किया।

आप पधारना दुधमल ने अपनी योजना की सफलता मान कर कहा और कभी फरियाद हो तो घोलकर पी जाना आपको आता ही है आप सभाल लेना। और महाराजा के पास आकर कोई न सुन सके इस तरह दुधमल न पाच सात वाक्य कह डाले।

अरे तू तो गजेला है इस तरह भूल जाते होंगे। महाराजा के मुह से इस तरह के वचन निकल पड़े।

दुधमल घावड़ा उठा बाहर निकला और तम्बू के बाहर

टहलने लगा सैनिकों की नजर चुका कर दूर जाके तैयार खड़े हुए अश्व पर चढ़ पाटण की तरफ चल दिया ।

स्वार्थी लोग अपना स्वार्थ साधने व महाराजा के कृपा पात्र बनने के लिये कैसे २ भ्रष्ट व पापी भी तैयार हो जाते हैं और अपने स्वामी को नेक सलाह देने व बदले कैसे २ जाल रचाते हैं और उसमें निर्दोष सद्गुणी मनुष्यों को फंसा कर वे अपना स्वार्थ किस प्रकार साधते हैं यह देख कर ही महापुरुष संसार से विरक्त होकर सुख की सामग्रियों को लातमार फिर निकल जाते हैं और अन्य भव्यजीवों को सद्बोध द्वारा बचाने की चेष्टा करते हैं ।

दुधमल करीब दश कोस पहुंचा होगा कि अचानक पिछे से एकदम डोरी का फांसा उस पर ऐसा पड़ा कि डोरी खिंचते ही उसके दोनों हाथ शरीर से सख्त बंध गये वह जाता हुवा अनेक प्रकार के विचारों में ऐसा उलझ रहा था कि इधर उधर आस पास आगे पिछे कौन आ रहा है उस बात का भान ही नहीं रहा ।

फांसा पड़कर बन्धने पर उसने पीछे फिर कर देखा तो एक सवार घोड़े पर वहां खड़ा था परन्तु हाथ जकड़ा जाने से तलवार तक नहीं पहुंच सकता था अश्व पर से उतरने के लिये छलांग मारने लगा तो डोरी खींचकर वह नीचे गिर पड़ा । दुधमल बैठा हो ही रहा था कि इतने में तो आगन्तुक छलांग मारकर घोड़े से उतर कर उसे पकड़ में ले लिया और सैनिक के पैर भी बांध दिये नीचे पटक कर कहा कि—

पहचाना ?

कौन — दुधमल ने पूछा

फिर पूछता है कौन ? आवाज से नहीं पहचान सका — सैनिक ने रोष से कहा।

हां हां पहचान गया सरयू ? दुधमल ने आवाज पहचान कर कहा।

हां सरयू — सैनिक ने कहा।

बांधने का कारण ? — दुधमल ने पूछा

कारण तो महाराजा को पूछना — सरयू ने कहा।

ठीक ठीक समझ गया — दुधमल ने कहा

समझ ने की बात तो पीछे परन्तु ख्याल रखना कि जसमा जो काम नहीं कर सकती वह मैं कर सकती हू बायडा। जसमा यों नहीं मिलेगी। जब तक सरयू जीवित है।

मैं भी देखता हूं। — दुधमल बल खाकर बोला

मैं भी देखती हूँ। महाराजा को दिलासा तो तूने बहुत दी है परन्तु वह तेरी आशा किस तरह फली भूत होगी यह न समझना कि यहां महता है और महेता के माफिक ठण्डी ताक्त से काम लिया जायगा यहां तो तुरत फुरत मजा चखा दिया जाता है। इतना कह कर ऊपर से एक लात मारी और वहीं बन्धा हुआ छोड़ कर सरयू अपने अश्वपर चढ़के पाटण की तरफ चलदी सरयू एक क्षत्रिय कन्या है वह बड़ी ही हिम्मत वाली है। पहले तो यह और इसका बड़ा भाई धनपाल दोनो ही शत्रु

महेता के पक्के शत्रु थे इसके भाई धापाल को तो महेताजी ने मारा था यह भी मौका देख कर महेता का खून करने के प्रयत्न में थी परन्तु महेता जी के दीर्घायु एवं तप तेज के आगे वैसा न कर सकी यानि इसकी हिम्मत नहीं पड़ी। धापाल के मरने के बाद यह अकेली रह गई थी। एक समय सरयू भरूच में मदनपाल ठाकुर के चूगल में फन गई थी वह अपनी दुर्भावना इससे पूरी करना चाहता था यह उसे नहीं चाहती थी अन्त में महेताजी की मदद से छुटकारा पाई तब से उनके पास ही उन की वफादार होकर रहती है और महाऽमात्य के कई अमात्य के कार्य करती थी सरयू महाऽमात्य की विश्वास पात्री थी। महाऽमात्य इसे पिछली खबर लाने को छोड़ गये थे सो दूसरे रोज सायंकाल होते होते पाटण पहुँच तो गई परन्तु अधिक थकने के कारण कमरे में जाकर सोगई-जसमा को उस बात की सूचना करना भूल गई। परिश्रम के कारण ऐसी नींद आई कि प्रात काल हो गया और महाऽमात्य के पुत्र पुत्री वयजू एवं देवल हाहु करने लगे कि बड़ी बहन आगई बड़ी बहन आगई तब शोर गुल से नींद खुली। सरयू के आगमन के समाचार महाऽमात्य को मिलते ही व तुरन्त आये और सरयू से पिछा सब वृतान्त जान लिया।

आपने जसमा को सूचना करा दी है न? सरयू ने पूछा

हां सब व्यवस्था करके ही आया हूँ। महाऽमात्य ने जवाब दिया।

क्या व्यवस्था की है ? सरयू ने पूछा

कल के कल रात ढलने पर चुपचाप विदा हो जाय सो व लोग तो रवाने हो गये होंगें और कितनी ही दूर निकल गये होंगें।

महेता जी ने कहा।

तपास कराई ? फिर सरयू ने पूछा।

मैंने आंवड को कह रखा है अभी आता ही होगा।

महाअमात्य ने कहा

इतने में आंवड आया और महेता जी ने पूछा

क्यों गये न ? जवाब नहीं मिला क्यों ? महेता जी ने पूछा

जसमा गुम है आंवड ने उत्तर दिया

क्या कहता है ? महेता जी ने आश्चर्य प्रकट किया

कल रात्रि में वे लोग तैयारी नहीं कर सके फजर में निकलने की तैयारी करते थे कि अचानक कोई जसमा को उठा कर ले गया ओड लोगों ने अभी ही मुझे कहा है। आंवड ने कहा

सब तो बाजी हाथ से गई ? परन्तु ठीक है। सरयू चावड़ा को तो बाँध ही आयी है इस लिये बदला ले सकेंगे।

महेता जी ने अपना विचार प्रकट किया।

परन्तु दुधमल चावड़ा तो यहाँ ही है। आंवड ने कहा

क्या कहा ? सरयू क्रोध में ही बोल उठी

यहीं फजर ही मैं ने राजमहल में उसे देखा है।

तब तो मैं ही जाऊं ? कह कर महाअमात्य जाने को तैयार हुए और दिवान खाने से बाहर पैर रखा इतने में तो ओड लोगों ने आकर महेता जी को घेर लिया और ओडलोगों का नायक टीकम ओट बोला—

माँ बाप ! आपका कहना नहीं माना रात को तैयार नहीं हो सके देरी हो गई दिन उगते २ रम्भा बहन के नाम से कोई छल करके उसे ले गया। वह भी रम्भा बहन के नाम से धोखे में आगई और साथ होगई। वहां तपास कराई तो खबर मिली कि यहा तो किसी ने नहीं बुलाया और न वह आई।

महेता जी और आंबड भाई सब परिस्थिति को भांप गये और उनको विश्वास देकर दरबार गढ में गये

ग्रहण करने योग्य शिक्षा

१ राजकीय प्रकृति ऐसी है जिसमें अनेक प्रकार की सावधानी रखनी पडती है और ऐसे मनुष्य रखने पड़ते हैं जिससे वास्तविकता का पता चल जायें। २ प्रपची लोग इस बात की प्रतिक्षा करते रहते हैं कि कोई मोका मिले और हम अपना पासा सीधा करें इससे चाहे किसी का अहित ही क्यों न होता हो। ३ जो लोग साहसिक और हिम्मत बहादुर हैं वे किसी को प्रपची के प्रपच का शिकार नहां होने देते वे अपनी शक्ति भर छुड़ाने और प्रपची को शिक्षा करने में पीछे नहीं हटते पर अपनी जान जोखम में डालकर

भी निर्दोष की सहायता करते हैं —जो सर्यू के वर्णन से ज्ञात हुआ होगा ४ किसी हितैषी के वचन पर ध्यान न देकर गफलत करने का व विषम वातावरण में किसी पर विश्वास करने का कैसा दुष्परिणाम होता है वह ओड लोगों और जसमा के वर्णन से ज्ञात हुआ होगा ऐसे समय में पुरी सावधानी रखनी चाहिये ।





कसौटी और मुक्ति



मत्तेभकुम्भदलनेभूनिसान्तिशूराः

केचित्प्रचण्डमृगराजवधेपिदक्षाः ॥

किंतुब्रवीमिबलिनांपुरत प्रसह्य

कन्दर्पदर्पदलनेविरलामनुष्या. ॥

(भर्तृहरि शृंगार शतक)

भावार्थ—उन्मत्त हाथी के मस्तक को विदारने वाले शूर इस पृथ्वी पर अनेक हैं और प्रचण्ड सिंह के सामने में दक्ष योद्धा भी कितने ही हैं परन्तु हम बलवानों के आगे हठ करके कहते हैं कि

कामदेव के मद का दमन करने वाला कोई विरला ही मनुष्य होगा।

मदन का वेग इतना बलवान है कि इसे रोकने के लिये बड़े बड़े योद्धा भी समर्थ नहीं हैं। वे भी स्त्री के स्वाभाविक हाव भाव से आकर्षित होकर रणभूमि से वापिस चले आते हैं। महाराज सिद्धराज भी जसमा के आकर्षण से खींचे हुये पाटण आ पहुँचे हैं। और हर उपाय से उसे अपनी बनाने के लिये क्या क्या प्रयत्न करते हैं और अन्त में वह कैसे छुटकारा पाती है सो इस प्रकरण में दिखाई देगा।

आज पाटण का वातावरण उग्र बन रहा है महाराजा सिद्धराज पाटण आ पहुँचे हैं और आज प्रात काल ही महाराजा ने दरबार के अन्दर आते ही महाऽमात्य का अपमान किया मालवा के राजा के सामने युद्ध का मोरचा न लेकर दंड की रकम देने के अभियोग में महेताजी को महाऽमात्य पद के अयोग्य ठहराये। महेता न हो तो भी मैं अपना राज्य सभाल सकूंगा ऐसा जाहिर किया। इस प्रवृत्ति से पाटण की जैन और जैनेतर प्रजा आवेश में आ गई थी परन्तु सिद्धराज को पाटण की प्रजा की इस समय दरकार नहीं थी। तुरत ही दरबार से निवृत होकर वह सीधा राज्यगढ़ में आये। और भोजन करके तुरन्त ही दिवानखाना में पहुँचे।

पहरेदार को हुक्म दिया कि मेरे से पूछे बिना किसी ...

खाना दें फिर भी वह उसमें प्रसन्नता का अनुभव नहीं करती, वह तो जंगल में स्वतन्त्र रह कर ही रहेगी पिंजरे में नहीं।

जसमा ने निर्भीकता से जवाब दिया।

जसमा ! तू ऐसे मोटे कपड़े (जाड़े कपड़े) पहने को नहीं जन्मी है तेरा बदन तो ये राजशाही रंगीले व चमकीले और महीन कपड़े की पोशाक व हीरे जवाहिरात या मोती के दागिनों से ही सुशोभित होता है। मुझे तेरे इस सुकुमाल बदन पर ऐसे डाटड़े देखकर दुःख होता है तू महल में चलकर वहां की छटा तो देख।

महाराज ने फिर वैसा ही पासा फेंका।

महाराज ! मुझे न तो बारीक रंगीले चमकीले कपड़े ही चाहिये न हीरा मोती हो ये तो आपकी रानियों के बदन पर ही अच्छे लगते हैं। मेरे को तो ये मोटे जाड़े कपड़े और जंगल में पैदा हुए घास की माला व मैस ही जंगली आभूषण पसन्द हैं जिसमें मेरा धर्म कर्म कायम रहे और मेरे पतिदेव भी मुझ पर प्रसन्न रहें। मुझे हीरा मोती के दागिने और बारीक वस्त्रों की जरूरत नहीं है।

जसमा ने निर्भीकता से उत्तर दिया।

जसमा कहां सूखी लूखी रोटी खाने और बदन को बिगाड़ने में पड़ी है जरा विचार तो कर मेरे महलों में चलकर देख वहां तेरे लिये अनेक तरह के मेवामिष्टान और रसवती (भोजन) तैयार है जिससे कि तेरा यह शरीर दीप उठे। वहां बहुत से दास दासी

तेरे हुक्म मे हाजिर रहेंगे और तू राजरानी . .

महाराजा को अटकाकर बीच में ही जसमा बोल उठी महाराज। आप जरा विचार करके जोवों महल और वहा की सुख सायबी तो आपकी रानियो के लिये ही है ओडराणी के लिये तो झोपडी भला और धरती। महाराज मेंने तो घाट रख रखी है मेरे पेट में पकवान पच भी नहीं सकते मेरे लिये तो राब व दलिया ही अच्छा है। मेरे को किसी दास दासी की जरुरत नहीं है मैं तो खुद दासी बनकर मेरे पति देव की सेवा करती हूँ और प्रसन्न रहती हूँ। जसमा ने स्पष्ट सुना दिया

तब तू नहीं मानगी ? साम दाम उपाय का प्रयोग कर के महाराजा ने देख लिया कि यह यों नहीं मानेगी इस लिये दण्ड नीति अख्त्यार करने का निश्चय किया इतनेमें महाराज ? आप पिता तुल्य है प्रजा के रक्षक हैं गुर्जर सम्राट् को ऐसा करना बीचमें ही जसमा को अटकाकर

जसमा—यह सुनने का मुझे अवकाश नहीं ऐसा तो मैंने बाहर बहुत सुन रखा है यदि तू हा कहे तो आनन्द से महल के अन्दर रखने को मैं तैयार हूँ और इन्कार करे तो मेरा विचार तो फिरने का है नहीं तू सीधी तरह स्वीकार नहीं करे तो बल से तुझे स्वीकार करना ही पड़ेगा महाराज बोल उठे

अपना बल आप आजमा लीजिये मैं भी देखती हूँ कि आप बल द्वारा [illegible] कराते हैं जसमा ने भी हिम्मत से जवाब

इसका परिणाम क्या आयेगा ? तुझे खबर है ?

महाराज ने व्यंग में कहा ।

हां अधिक से अधिक तो रक्तपात

जसमा ने भी हंसाई जवाब दिया ।

रक्तपात नहीं परन्तु तेरा पात ।

महाराजा ने जोश में आकर कहा ।

महाराज ! यह विचार अमल में लावें २ तो आपको आकाश पाताल एक करना पड़ेगा हम लोग गरीब हैं इससे क्या हुआ ? मनुष्य तो हैं । आप जितने मानापमान का ध्यान रखते हैं उतना ही हम रखते हैं आप जितनी ही इज्जत आबरू पर धर्म की भावना हमारे में भी है । आपने यह सोच रखा है कि गरीबों का क्या मूक पशु है जब चाहा तब मन माना उपयोग कर सकते हैं परन्तु इसमें आप भूलते हैं मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि आप समझें, नहीं तो आपकी भूल राज्य को हानि प्रद बनेगी । जसमा ने धीरता पूर्वक अपना मन्तव्य सुनाया ।

मैं समझूंगा तब तकतो तू पाटण की पटरानी बन जायगी ।

महाराजा ने भी व्यंग से ही कहा ।

महाराज ! इस विचार को तो आप अपने हृदय में ही रहने दीजिये पाटण की पटरानी तो आपको दूसरी ही खोजना पड़ेगा यहकर जसमा दरवाजों की तरफ जाने लगी । हैं सिद्धराज ने कमरे के बाहर नजर डालते हुए कहा तू सीधी तरह नहीं मानेगी न !

सीधी या बाकी किसी भी तरह नहीं। जसमा ने स्पष्ट कहा।

तब मैं देखता हू महाराजा बोले।

और मैं भी देखती हूँ। जसमा ने भी वैसा ही उत्तर दिया।

तुझे खबर है कि तू नि शस्त्र है।

महाराजा ने उसका बल देखने के लिये कहा।

परन्तु मेरे पास भी बड़ा शस्त्र है और वह मनोबल का

जसमा ने बल प्रकट किया।

तब तेरे मनोबल को मुझे देखना पड़ेगा? महाराजा ने कहा।

देखो। कह कर जसमा सिद्धराज से एक तरफ होकर आगे बढ़ी।

बस यही तेरा मनोबल है न? कहते हुए आगे आकर महाराजा ने जसमा का हाथ पकड़ लिया।

जसमा एकदम घबराई और धुममारी तथा सिद्धराज को धक्का देकर आगे बढ़ी परन्तु पीछे से उसका हाथ खिंचा गया इतने में आवाज आई। महाराज इसे मत छूना।

कौन? सिद्धराज आवाज की दिशा की तरफ देखकर चमका और कहा मेहता?

जी महेताजी ने जवाब दिया।

बिना इजाजत के ही। महाराज ने कहा।

मेहता जी बिलकुल सिद्धराज के पास ही आकर खड़े होगये। जसमा एक तरफ खिसक कर खड़ी होगई।

महेता के अचानक आ जाने से महाराजा एकदम लज्जित से होगए। अधिक बोलने की हिम्मत न रही हाथ पैरों में धूजणी छुटगई कोई हिम्मत बधावे ऐसा वहां था भी नहीं।

जसमा जल्दी बाहर निकल महाऽमात्य ने कहा।

जसमा ने महेता जी के सामने देखा और महाराज के सामने भी नजर पड गई वह काँपने लगी

हरामत। मैं हू वहाँ तक तेरे सामने कोई आँख उठा कर भी नहीं देख सकता जा बाहर तेरी राह देख रहे हैं।

महाऽमात्य ने जसमा को हिम्मत दी।

जसमा आगे बढी महेता जी भी पीछे पीछे चले। सिंह गाजे इतनी शक्ति सिद्धराज की जीभ ऊपर आई परन्तु वह उसी समय विलीन होगइ। मुँह बिलकुल सीं गया। जीभ तालवे से निकलती ही नहीं।

जसमा बाहर आई-महेता जी उसको राजगढ की ड्योढी तक आकर पहुँचा गये आर पीछे दिवानखाना में आकर खडे होगये थे। अब उनकी आँखें वहा मुजाल महेता को देखने के लिए उत्सुक थी परन्तु वह कहीं भी नहा मिला यदि यह मिल गया होता तो महाऽमात्य उसे अच्छी तरह फटकारे बिना न रहते।

जिस समय महाऽमात्य गुजरात की सरहद पर से एकदम वापिस लौट गये थे उसी समय मुनाल समझ गया था कि महेता जी सैन्य को छोड़ कर महाराज से बिना मिले ही लौट गये हैं सो पानी फेर देंगे और हमने जो महाराजा को पाटण ले जाने का प्रयत्न किया है वह निष्फल हो जावेगा इससे महाराजा को तो मालवा जाने का समझा कर रवाने हुआ था परन्तु मालवा न जाते हुए वह भी दूसरे रास्ते से पाटण की तरफ रवाने हो गया था दुधमल घावडा भी महाराजा से पाटण आने को विदा हुआ था वह यह समझता था कि मेरे पाटण की तरफ रवाने होने की खबर किसी को नहीं है परन्तु तम्बू के पीछे छिपी हुई सरयू ने महाराजा और दुधमल की मन्त्रणाएं सुनली थीं; इससे वह भी गुप्त रीति से पहले ही रवाने हो गई थी और मौका पाकर दुधमल को रास्ते में ही मार कर पटक के पाटण पहुँच गई थी परन्तु जसमा को सावचेत करना भूल कर थकी हुई अपने शयनागार में जाकर सो गई थी मुजाल महेता थोड़ी दूर तक तो मालवा के रास्ते पर गया पर ■ विचार बदल जाने से वह आड़े रास्ते पड़ा था कारण महाराजा की छावणी में बचना था और किसी से मिल जाने का भी भय था। दूसरे रोज दुधमल जहाँ पर पड़ा हुआ था वहीं पर आनिकला दुधमल को पहचान कर घोड़े पर से उतर करके कटार से उसके बन्ध काटे और दोनों पीछे घोड़े पर सवार होकर जल्दी से उसी रात को पाटण पहुँच गये। तपास हो पाटण आकर मालुम किया तो ज्ञात हुआ कि खोड़लोत आने की तैयारी

कर रहे हैं पर अभी गये नहीं। दुधमल ने शीघ्र ही ओड लोग जाने लगे उस से पहले ही जसमा की बहन रम्भा के नौकर को बनाकर तुम्हें रम्भा बहन बुलाती है ऐसा उसे भेज कर वह लाया और जसमा को आते ही कब्जे में करके दिवानखाने के कमरे में बन्द कर दी थी।

महाराज सिद्धराज भी आराम किये बिना ही एक दम पाटण पहुँच गये थे और आते ही प्रातःकाल दरबार करके पहले तो महाऽमात्य महेताजी का अपमान किया था और बाद दरबार बरखास्त कर के दिवानखाना में आये थे महाऽमात्य महेताजी चाहते तो उसी समय दरबार में ही महाराजा को जैसा का तैसा जवाब दे सकते थे परन्तु उस समय उन्होंने कुछ नहीं किया सब मानापमान को पी गये कारण उनको जसमा का उद्धार करना बाकी था सो इस जगह महाराजा के पंजे से छुड़ा कर उसका उद्धार किया।

जसमा पाटण शहर को अन्तिम भेंट करके पाटण से आगे बढ़ रही थी। आनंद मरयू और रम्भा उसे दूर तक पहुंचा कर वापिस लौट आये। ओड लोग उसके साथ आगे बढ़े जा रहे थे।

ग्रहण करने योग्य शिक्षा—

१ जब मनुष्य कामांध हो जाता है और वैसे ही अनुकूल साधन या सहायक मिल जाते हैं तब वह क्या अनर्थ नहीं करता और उसमें विघ्न पड़ता दिखाई देने पर उन नेक नियत, खैर

स्वाह और गुरुजनों के साथ भी कैसा दुर्व्यवहार करता है सो महाऽमात्य का महाराजा के दरबार में किये हुए अपमान से स्पष्ट होता है। २ कामान्ध मनुष्यों को अपना हित चाहने वाले सज्जन भी शत्रु से लगते है और लुच्चे बदमाश आफत में फसाने वाले दुर्जन लोग अत्यधिक प्रिय लगते हैं इससे वह सज्जनों का निरादर और दुर्जनो का आदर करता है और अपने आपको पतन के गव्हर में डालता है ३ कामान्ध मनुष्य अपनी लालसा पूरी करने के लिये साम दाम दड भेद से सती पवित्रात्मा स्त्रियों को कैसे २ कष्ट में डालकर उनको प्रलोभन व भय दिखाता है परन्तु जो धर्म तत्व को समझने वाली पवित्रात्मा स्त्रियें होती हैं वसे समय मे भी निडर होकर अपने धर्म पर अडिग रहती हुई उन कामी मनुष्यो के दबाव में नहीं आती और अपने आत्म बल का परिचय देती हैं यह महाराजा सिद्धराज एव जसमा के सवाल जवाब में स्पष्ट है। ४ जो लोग नीतिमान एव परोपकारी होते है वे अपने मानापमान तथा पद रक्षा की परवाह न करते हुए अपने प्राणो को जोखिम में डालकर भी निर्बलों की रक्षा करने के लिये पहुँच जाते हैं और वहाँ से उनका उद्धार कर उन्हें सहिसलामत उस आपत्ति में से छुड़ा लेते हैं यह महाऽमात्य शान्तुमहता की साहसिकता स्पष्ट करती है ५ स्वार्थि लोग अपना स्वार्थ साधने एव अपने स्वामि के कृपा पात्र बनने के लिये कैसे २ अनर्थ करते हैं और निर्दोष मनुष्यों को फँसाने की चेष्टा करते हैं यह मुजाल महेता एव दुधमल के वर्णन से विदित होता है।



जिम्मेदारी और पद त्याग



यद् चेतनोपिपादै,° प्रेष्टभज्वलातिसवितुरिनका तः ॥
तत्तेजस्वी पुरुष परकृत विकृतिकथसहते ॥ १ ॥

(भर्तृहरि नीतिशतक)

भावार्थ—सूर्य कान्तमणि सूर्य के पादस्वरूप किरणों के लगते ही जल उठती है इसी तरह तेजस्वी स्वाभिमानी पुरुष भी परकृत विकृति को कैसे सहन कर सकते हैं ? अर्थात् कभी नहीं।

महाराजा सिद्धराज ने अपने स्वार्थ में बाधक बनने के कारण पूर्व के सब उपकारों और सेवाओं को भूल कर गुर्जर महामन्त्री

अन यह नहा हो सकता। महाअमात्य ने भी वैसा ही मजबूत जवाब दिया।

मेथा की कदर करके मुद्दत तक एक की एक जगह ही जवाबदारी सौंप रखी इसका लाजब लगा है क्यों ? कहकर महाराना ने पहरेदार को आवाज दी।

जी कहता हुआ पहरेदार हाजिर हुआ।

महेता को गिरफ्तार करलो महाराना ने हुक्म दिया

पहरेदार कुछ आगे बढ़ा किन्तु तुरन्त ही दो पांव पीछे हठ गया महेताजी के मुह पर से निकलते हुए अपूर्व तेज पुज के आगे बिचारे पहरदार की क्या ताकत ? जो आगे बढ़े महाराज। महेताजी के बदले मुझे बन्दी बना लीजिये।

पहरेदार ने अर्ज की

अन तो सिद्धराज का क्रोध अधिक भड़क उठा और आवाज दी कोई है हाजिर ?

आवाज सुनते ही अनेक मनुष्य हाजिर हो गय और राज्य गढ की गढी पर का नायक (कप्तान) भी हाजिर हुआ दास दासी भा आ गय और पहरा देने वाले अनेक सैनिक भी खड़े हो गये महेता को पकड़ कर महामात्य सूचक राज्य चिन्ह इसके पास से लेलो। महाराजा ने उग्रता पूर्ण हुक्म सुनाया

। सुनकर सब के सब स्तब्ध रह गये कोई भी हिला या चला नहीं राज्यगढ के अन्दर कोलाहल मच गया वातावरण ही बदल गया और कोई उत्कापात होता हो वैसा भयंकर द्रश्य सब को

लगा जिस का निवारण करना किसी मे भी शक्य नहीं था किसी में कोई भी रास्ता ढूंढ निकालने की सामर्थ्य नही थी सबको अपनी बुद्धि अल्प लगती थी।

इतना अधिक जोर ? कह कर सिद्धराज खुद ही आगे बढ़ा अब तो मुझे ही हाथ उठाना पड़ेगा।

महाराज ! वहीं खड़े रहिये महाऽमात्य ने भी जोश में आकर कहा

तू मुझ पर हुक्म नहीं करे तो फिर करेगा ही कौन ? कहते हुये महाराजा महेता के बिलकुल निकट पहुँच गये।

महाराज फिर भी कहता हूँ कि वहा खड़े रहो महेताजी ने कहा और सिद्धराज के पांव एकदम थम गये महेताजी की किसी अदृश्य शक्ति ने महाराजा को वहीं पर स्थिर कर दिया जहां खड़े थे।

अचानक वातावरण पलटा खागया सभा में शान्ति छा गयी राज्य माता मीनलदेवी एकदम दौड़ते २ दिवान खाना में आकर खड़ी होगई और पूछा सिद्धराज यह क्या कर रहा है ?

रमत। बेवफाई भरे जवाब से माता का सत्कार हुआ

जब मनुष्य गुस्से में आ जाता है और आपा भूल जाता है तब उसे कुछ नहीं सूझता वह चाहे सो बोल देता है।

रमत ? राज्यमाता ने सवाल किया

हां मुझे महेता नहीं चाहिये महाराजा ने माता से कहा

तब ? राज्यमाता ने प्रश्न किया

मैं किसी ` भी मोध लेऊंगा महाराजा ने

कारण ? राज्य माता ने पूछा

मेरा अपमान महाराजा ने कहा

अपमान मेरा कि तुम्हारा ? महता जी बीच में ही बोल उठे

महता जी ? शान्त होओ यह बालक है राज्य माता बोली

बालक नहीं परन्तु राजा हूँ महाराजा ने माता को स्पष्ट सुनाया

शान्त। राज्यमाता ने महेता को कहा

शान्त हो गया हूँ तो अब तुमसे भय न महेताजी ने राज्य माता को जवाब दिया परन्तु तुमको देखता हूँ और मेरा मन पश्चाताप पर चढ़ा हुआ हो तो भी शान्त हो जाता है बहन ? तुम न आई होती तो पाटण का पुण्य आज परवार गया होता और महाराजा को खबर पड जाती कि पाटण की गद्दी पर इनकी जरूरत केवल शोभा पूर्ति है बाकी राज्य तो जवाबदार व्यक्तियों से ही चलता है।

बहन ! तुम्हें देखता हूँ और स्वर्गीय महाराजा क्यों याद आते हैं और उनके अन्तिम शब्द भी याद आते हैं तथा तुम्हारी वह कल्याणमूर्ति भी भाई को बांधते वक्त की याद आती है यह महाऽमात्य पद का सूचक राज्यचिन्ह तुम्हारे चरणों में भेंट करता हूँ पाटण का महाऽमात्य पद अब मुझको नहीं चाहिये। महेताजी ने उसी गम्भीरता से राज्यचिन्ह राज्य माता के सामने रख दिया

पर है क्या ? राज्यमाता ने प्रश्न किया

कुछ नहीं। मानापमान को तो निगल गया हूँ और फिर भी हजम कर जाता हूँ स्वर्गस्थ महाराजा कर्ण के नाम के नीचे फिर

भी में महाराजा को कह जाता हू कि "जसमा" यों नहीं मिल सकेगी पाटण की प्रजा या समझती है कि आज महाराजा ने जसमा ओडण की आबरू लेने का इरादा किया है तो क्या कल पाटण की प्रजा की ही बहन बेटियों की आबरू नहीं लें इसकी खातरी क्या ? इसलिये पाटण पर राज्य करना हो तो अब भविष्य में ऐसे मनोरथ कभी न करें।

कौन जसमा ? मीनलदेवी स्तब्ध हो गई।

हां अभी ही उसे महाराजा के पंजे से छुडाकर यहां से उस के देश की तरफ मैंने रवाने की है। उसी के लिये तो युद्ध में गये हुए महाराजा यहां आये हैं। महेता जी ने स्पष्टी करण किया परन्तु इस बात की अब मुझे क्या दरकार है। बहन मैंने तो कल का ही निश्चय कर रखा था कि यह महाऽमात्यपद की जोखम दारी अब मुझे नहीं चाहिये। और प्रभात-तक तो पाटण में मेरी उपस्थिती भी नहीं रहेगी। महेताजी ने पीठ फेर कर ही यह वाक्य पुरा किया था और आगे बढ़े सो सबके देखते २ ही चले गये।

मीनलदेवी ने आवाज दी महेता ?

परन्तु महेता ने जरा भी ध्यान नहीं दिया धुमें मारने पर भी पीछे नजर तक नहीं की जैसे एक परिग्रहधारी व्यक्ति अपरिग्रही होकर जगल में जाता हो। महेता जी ने भी पाटण ही नहीं परन्तु पाटण और सारी गुर्जर भूमि को त्याग दी हो इस प्रकार पाटण में होते हुए भी उपेक्षित बन गये। उन्हें अपने निश्चय मे डिगाने को कोई समर्थ नहीं हुआ और दुसरे रोज प्रभात होते

ही पाटण से विदा होगय राज्यमाता व पाटण की प्रजाके आगे वाना न बहुत कुछ कहा परन्तु महेता जी ने अपने निश्चय को बदला ही नहीं अन्त में सब हार थक कर कुछ दूर तक पहुँचा के वापिस आ गये।

ग्रहण करने योग्य शिक्षा—

१ राज्य कारोबार में राजा का मन्त्रियों का सैनिक का और प्रजा का क्या सम्बन्ध है और महाराजा किस हद तक प्रजा पर या मन्त्रियों पर अपना हुक्म चला सकता है, और सत्यप्रिय न्यायपरायण मनुष्य महाराजा की भी अनुचित हा में हा न मिलाते हुए नग्न सत्य सुना देते हैं और समय आने पर प्रजा के धर्म कर्म का रक्षण करने के लिय वहा तक आ मयल पर डटकर अपनी जान को आफत में डाल देते हैं यह महेता जी के वर्णन से स्पष्ट समझ में आ जाता है—२ आत्मबल एक अपूर्व बल है, जब यह जब पूर्ण रूपेण प्रकट हो जाता है, तब इसके आगे सब बल व्यर्थ हो जाते हैं। बडे २ शस्त्र व अस्त्राधारी भी आत्म बली का कुछ नहीं बिगाड़ सकते आत्मबली राजा महाराजाओं को भी कटु सत्य सुना सकता है उसको किसी की अपेक्षा नहीं रहती वह महान् शक्ति शाली का भी सामना कर लेता है, यह महाऽमात्य महता जी क वर्णन मे दिखेगा। ३ जहां मनुष्य आवेश मे आ जाता है वहा वह भान भूल जाता है उसे अपने पूर्वों का भी ख्याल नहीं रहता है उनके आगे भी यद्वतद्वा बोल जाता

है, और उसका अपमान कर बैठता है। महाराजा सिद्धराज भी अपनी माता के समक्ष किस प्रकार पेश आया है, यह देखिये ४ सत्य और न्याय प्रिय मनुष्यों को अपने पदाधिकार का ज़रा भी मोह नहीं होता वे तुरन्त छोड़ देते हैं, परन्तु उसका दुरुपयोग भी नहीं होने देते हैं, और छोड़े बाद उसके सामने भी नहीं देखते हैं।



११

कलिदान



तावन्महत्त्वं पाण्डित्यं, कुलीनत्वं विवेकिता ॥
यावज्ज्वलतिनाङ्गेषु, हत पञ्चेषु पावकः ॥ १ ॥

(भर्तृहरि शृंगार शतक)

भावार्थ—बड़ाई, पण्डिताई, विवेकता और कुलीनता ये सब मनुष्य के हृदय में वहाँतक ही कायम रहते हैं जबकि उसके शरीर में कामाग्नि प्रज्वलित न हो इससे यह सिद्ध होता है कि मनुष्य कामाग्नि के प्रदीप्त होने पर सभ्यता बुद्धिमत्ता विवेक और कृत्याऽकृत्य

का भान भूल जाता है फिर तो वह उसीके पीछे बड़े बड़े अनर्थ भी कर बैठता है और जगत में बदनाम भी होता है।

महाराजा सिद्धराज ने भी जसमा को येन केन प्रकारेण प्राप्त करने के लिये कहाँ तक प्रयत्न किया और अन्त में क्या पाया यह इस प्रकरण में दिखाई देगा।

जसमा को मुक्त करा कर अपना राज्य पिन्द सौंप के महता राज्यगढ़ में चले गय तब महाराजा सिद्धराज ने आड़ लोगों की तपास कराई तो मालुम हुआ कि मोढेरा की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। जिनको जिसकी लगनी लग जाती है उसको वही सुजता है दूसरा कुछ भी नहीं संध्या हुई थोड़ी रात्रि गई कि महाराजा सिद्धराज थोड़े मनुष्यों (अंगरक्षकों) को साथ लेकर किसी [illegible] न पड़न देते हुए गुप्त रीति से मोढेरा की तरफ चल [illegible] के पहले तो वे मोढेरा पहुँच गये। सामान भरे हुए गाड़े [illegible] आगे बढ़ते जा रहे थे। गाड़ाओं पर बैठे हुए ओड [illegible] दस बारह घोड़े सवारों को पीछे से आते [illegible] ही वे धमके चलाते हुए गाड़े रुका दिये गये। फिर [illegible] से उतरतो ओट की ऐसे मालुम पड़ती थी कि [illegible] सबने परस्पर सलाह कर रखी हो इस [illegible] ही ओडलोग उतर पड़े शेष ओडलोग [illegible] गाड़ाओं में आगे बढ़ीं। गाड़े [illegible]

वहां रहे हुए ओडलोगों ने [illegible]

एक व्यूह रच लिया और व्यूह के बीच म रूप की अपसरा जसमा को खड़ी की।

महाराजा सिद्धराज अग रक्षकों सहित थोड़ी देर म वहाँ आ पहुँच ओडलोगों को घेरा घाल हुए देखे जो बीच में जसमा को लिये हुए खड़े थे ओडलोगों के पास भी शस्त्र आदि थे परन्तु वे नाम मात्र के लेकिन व सुसज्जित थे। एक आर्य महिला की प्रतिष्ठा के खातिर उन्होंने अपने मरन का भय और जीवन की आश छोड़ रखी थी।

महाराजा सिद्धराज ने नजदीक आकर कहा—तुम लोग तैयार तो हुए हो परन्तु जो जीना चाहते हो तो जसमा को सौंप दो और चले जाओ किसी का बाल भी बाका नहीं होगा।

ओड लोगों का नायक टीकम ओड पहले तो चूना किन्तु शीघ्र ही सचेत होकर उसने महाराजा का तिरस्कार किया।

सिद्धराज क्रोधित हो गये और आक्रमण करने को हुक्म दिया टपा टप बिना शस्त्र और बिना तालिम के ओड लोग धरती चाटने लगे। कितने ही साथी मरे कितने ? भाग छूटे और अन्त में ओडलोगों का नायक टीकम भी मारा गया। जीवित रही केवल जसमा।

सिद्धराज ने तुरंत हुक्म दिया और शस्त्र म्यान हुए।

रक्त रंजित भूमि पर जसमा खड़ी थी। सिद्धराज अश्व से उतर कर उसके सामने आ खड़े हुवे और बोले—क्यों अभी और चमत्कार देखना है?

हाँ जसमा ने निडरता से कहा।

अच्छा । सिद्धराज ने चिढ़कर कहा—और सैनिकों की तरफ मुह कर के बोले तुम दूर खड़े रहो ।

सैनिक लोग सब दूर जाकर गोल चक्कर के आकार में खड़े रहे, सिद्धराज बिलकुल जसमा के पास आये और बोले—

अब ? कोई है बचाने वाला महेता बहता ?

महाराज दूर रहना जसमा ने जवाब दिया

कारण ? महाराजा ने पूछा

मैं पाटण चलने को तैयार हूँ जसमा ने युक्ति का प्रयोग किया है । सिद्धराज आश्चर्य मुग्ध बन गया और कहने लगा पहले से ही समझ गई होती तो ?

रण्डाये बाद् उहापण आवे उसका उपाय ही क्या ?

जसमा ने मन में कहा

परन्तु मुझे पाटण में ले जाकर करोगे क्या ?

गुर्जर देश की महारानी ? सिद्धराज ने अपने भाव प्रकट किये

महारानी ? महारानी तो बनाना तुम्हारी रानी को मैं महारानी बनकें क्या करूंगी ? जसमा ने अपनी आँखों को स्थिर करते हुए कहा और साथ ही महाराजा को असावधान देख कर छलाग मार के महाराजा के हाथ से कटार छुड़ाने के लिये अपना हाथ मारा ।

महाराजा सिद्धराज उसके हाथ को दूर करना चाहते हैं । उससे पहले ही जसमा कटार ले लेती है । अब तक जो कटार महाराजा सिद्धराज के हाथ में शोभ रही थी वही कटार जसमा के हाथ में शोभने लगी । और वह गर्वर कर बोली । महाराज !

तब व्यूह रच लिया और व्यूह के बीच में रूप की अप्सरा जसमा को रखा थी।

महाराजा सिद्धराज कुछ रक्षकों सहित थोड़ी देर में वहाँ आ पहुँचे ओडलोगों की जगह पास हुए इन्हें जो बीच में जसमा को लिये हुए खड़े थे ओडलोगों के पास भी शस्त्र आदि थे परन्तु वे नाम मात्र के सज्जित व सुसज्जित थे। एक आर्य महिला की प्रतिष्ठा के खातिर उन्होंने अपने मरने का भय और जीवन की आशा छोड़ रखी थी।

महाराजा सिद्धराज ने नजदीक आकर कहा—तुम लोग तैयार तो हुए हो परन्तु जो जीना चाहते हो तो जसमा को सौंप दो और चले जाओ किसी का बाल भी बांका नहीं होगा।

ओड लोगों का नायक टीकम ओड पहले तो घुजा किन्तु शीघ्र ही सचेत होकर उसने महाराजा का तिरस्कार किया।

सिद्धराज क्रोधित हो गये और आक्रमण करने को हुकम दिया टपा-टप नि शस्त्र और बिना तालिम के ओड लोग धरती चाटने लगे। कितने ही साथी मरे कितने ? भाग छूटे और अन्त में ओडलोगों का नायक टीकम भी मारा गया। जीवित रही केवल जसमा।

सिद्धराज ने तुरन्त हुक्म दिया और शस्त्र म्यान हुए।

रक्त रंजित भूमि पर जसमा खड़ी थी। सिद्धराज अश्व से उतर कर उसके सामने आ खड़े हुवे और बोले—क्या अभी और चमत्कार देखना है?

हाँ जसमा ने निडरता से कहा।

अच्छा। सिद्धराज ने चिढ़कर कहा—और सैनिकों की तरफ मुह कर के बोले तुम दूर खड़े रहो।

सैनिक लोग सब दूर जाकर गोल चक्कर के आकार में खड़े रहे, सिद्धराज बिलकुल जसमा के पास आये और बोले—

अब ? कोई है बचाने वाला महेता जहेता ?

महाराज दूर रहना जसमा ने जवाब दिया

कारण ? महाराजा ने पूछा

मैं पाटण चलने को तैयार हूँ जसमा ने युक्ति का प्रयोग किया है। सिद्धराज आश्चर्य मुग्ध बन गया और कहने लगा पहले से ही समझ गई होती तो ?

रण हारे बाद डहापण आवे उसका उपाय ही क्या ? जसमा ने मन में कहा

परन्तु मुझे पाटण में ले जाकर करोगे क्या ?

गुर्जर देश की महारानी ? सिद्धराज ने अपने भाव प्रकट किये

महारानी ? महारानी तो बनाना तुम्हारी रानी को मैं महारानी बनके क्या करूंगी ? जसमा ने अपनी आँखों को स्थिर करते हुए कहा और साथ ही महाराजा को असावधान देख कर छलांग मार के महाराजा के हाथ से कटार छुड़ाने के लिये अपना हाथ मारा।

महाराजा सिद्धराज उसके हाथ को दूर करना चाहे हैं। उससे पहले ही जसमा कटार ले लेती है। अब तक जो कटार महाराजा सिद्धराज के हाथ में शोभ रही थी वही कटार जसमा ... में शोभने लगी। और ...



चमकना मत तुम्हारे सैनिकों के देखते देखते तुम्हारा खून पी सकती हूँ। इतनी मैं हिम्मत रखती हूँ। और तुम्हारे किये का बदला अभी का अभी ले सक्ती हूँ। परन्तु मैं ऐसा करना नहीं चाहती। मैं राण्ड हुई तो भले ही हुई। परन्तु गुर्जर भूमि को राण्ड बनाना नहीं चाहती। यह कहने के साथ ही जसमा ने कटार आकाश में ऊँची उठाई और बोली।

लो जिस रूप के कारण मेरा परिवार तुमने नष्ट किया है वह रूप का यह खोखा सभालो।

महाराना उसका हाथ पकड़ने को अपना हाथ फैलाते हैं। इतने में तो कटार जसमा की छाती में पहुँच जाती है। जसमा के गिरते हुए शरीर को महाराना ने सभाला। आंख खुलते ही जसमा ने महाराना सिद्धराज को अपने पास बैठा देखा। थका मारकर तिरस्कार पूर्वक अपना मुह फेर लिया। आसपास महाराना सिद्धराज के अंग रक्षक अपना मलीन मुह किये हुए खड़े थे। और महाराजा सिद्धराज उस कुम्हलाते हुए पुष्प पाखडी का सौरभ खिचने को ठण्डी सास लेते हुए, आखों से मोतियों की वर्षा कर रहे थे। और अपने किये हुये का पश्चाताप कर रहे थे। कहा भी है कि—

बिना बिचारे जो करे, सो पीछे पछिताय।
काम बिगारे आपनो, जग में होत हसाय ॥ १ ॥

कोई २ कहानी व गरबी में ऐसा भी कहा जाता है कि कटार खाकर मरते मरते जसमा ने महाराजा सिद्धराज को श्राप दिया

था कि—"तेरा तालाब भरे नहीं और तेरा वंश निर्वंश जाय यह कहा तक सत्य है सो तत्व केवली गम्य है, यह भी कहावत है कि सती श्राप देती नहीं।

टिप्पणी—

१ जो मनुष्य काम के वशीभूत हो जाता है उसको वही दिखता है और उसी को प्राप्त करने के लिये विवेक को खोकर ऐसा पीछे पड़ता है कि चाहे कितना ही भयंकर पाप करना पड़े वह जरा भी नहीं हिचकिचाता उसके लिये मनुष्यों का संहार करने को भी तैयार हो जाता है जो महाराजा सिद्धराज के प्रयाण वर्णन में दिखाया है। २ सत्वशाली आत्मा अपने आत्मीय जनों का संहार हो जाने और निराधार स्थिती में आजाने पर भी धैर्य को नहीं त्यागते और मौका पाकर अपने प्राणों का बलिदान कर देते हैं, परन्तु किसी का अकल्याण नहीं करते जो जसमा के आदर्श से दिखाई देगा। ३ शत्रु को दबाकर या नाश करके भी शत्रुता को नष्ट नहीं कर सकता किन्तु अपना बलिदान करने से शत्रु के दिल से भी शत्रुता नष्ट हो जाती है और वह [illegible] का पश्चाताप करता है, यह जसमा के बलिदान और [illegible] सिद्धराज के पश्चाताप से सिद्ध है। ४ जिस कार्य का परिणाम न विचारते हुए जो उसमें आगे बढ़ता ही जाता है। उसको सिवाय पश्चाताप के और क्या मिलता है, यह इस [illegible] जाना जा सकेगा। समाप्त।